टाइम्स ऑफ़ पीडिया

ٹائمس آف پیڈیا

TIMES OF PEDIA

NEW DELHI Page 12 Price ₹ 3.00

अनोखे अंदाज़ और निराले तेवर के साथ इंसाफ़ की डगर पर

www.timesofpedia.com

WEEKLY HINDI ENGLISH URDU

WED 26 JAN 2022 - TUE 01 FEB, 2022

VOL. 10. ISSUE 06

RNI No. DELMUL/2012/47011

गणतंत्र दिवस समारोह का समापन महात्मा गांधी की पुण्यतिथि के साथ हुआ

नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली के करियप्पा ग्राउंड में राष्ट्रीय कैडेट कोर की रैली का निरीक्षण किया. उन्हें पगड़ी पहने देखा गया, क्योंकि उन्होंने गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण किया और एनसीसी के टुकड़ियों द्वारा मार्च पास्ट की समीक्षा की.गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान, पीएम मोदी ने उत्तराखंड से ब्रह्मकमल टोपी और मणिपुर से एक स्टोल पहनी थी.

एनसीसी रैली एनसीसी गणतंत्र दिवस शिविर की परिणति है और हर साल 28 जनवरी को आयोजित की जाती है. उन्होंने एनसीसी कैडेटों को सेना की कार्रवाई, स्लेदरिंग, माइक्रोलाइट फ्लाइंग, पैरासेलिंग के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए देखा. उन्होंने सर्वश्रेष्ठ एनसीसी कैडेटों को पदक से भी सम्मानित किया.

एनसीसी रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इस समय देश अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है. और जब एक युवा देश, इस तरह के किसी ऐतिहासिक अवसर का साक्षी बनता है, तो उसके उत्सव में एक अलग ही उत्साह दिखता है. यही उत्साह मैं अभी करियप्पा ग्राउंड में देख रहा हूं.

उन्होंने कहा, मुझे गर्व है कि मैं भी कभी आपकी तरह ही एनसीसी का सक्रिय कैडेट रहा हूँ. मुझे एनसीसी में जो ट्रेनिंग मिली, जो जानने सीखने को मिला, आज देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन में मुझे उससे असीम ताकत मिलती है.

पीएम ने कहा, अब देश की बेटियां सैनिक स्कूलों में एड्मिशन ले रही हैं. सेना में महिलाओं को बड़ी जिम्मेदारियां मिल रही हैं. एयरफोर्स में देश की बेटियां फाइटर प्लेन उड़ा रही हैं. ऐसे में हमारा प्रयास होना चाहिए कि एनसीसी में भी ज्यादा से ज्यादा बेटियां शामिल हों. उन्होंने कहा, आज इस समय जितने भी युवक–युवतियां NCC में हैं, उसमें से ज्यादातर इस शताब्दी में ही पैदा हुए हैं. आपको ही भारत को 2047 तक लेकर जाना है. इसलिए आपकी कोशिशें, आपके संकल्प, उन संकल्पों की सिद्धि, भारत की सिद्धि होगी, भारत की सफलता होगी. जिस स्कूल–कॉलेज में NCC हो, NSS हो वहां पर ड्रग्स कैसे पहुंच सकती है. आप कैडेट के तौर पर खुद ड्रग्स से मुक्त रहें और साथ ही साथ अपने कैंपस को भी ड्रग्स से मुक्त रखें. आपके साथी, जो NCC&NSS में नहीं हैं, उन्हें भी इस बुरी आदत को छोड़ने में मदद करिए.

भारत ने इस साल 26 जनवरी को अपना 73वां गणतंत्र दिवस मनाया, जब देश ब्रिटिश राज से आजादी के 75 साल के हिस्से के रूप में आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है. गणतंत्र दिवस समारोह का समापन महात्मा गांधी की पुण्यतिथि के साथ होगा, जिसे देश भर में शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है.

–एजेंसी

Ali Aadil Khan - Editor's Desk

क्या उनपर कोई कानून लागू नहीं होगा?

दिल्ली में बीजेपी सांसद प्रवेश साहिब सिंह के आवास पर किसान के नाम पर जाट नेताओं के साथ गृहमंत्री अमित शाह की मीटिंग हुई इसको 'सामाजिक भाईचारा बैठक' का नाम दिया गया, इसमें शिरकत करने वाले सभी नेता हिन्दू जाट थे, जबकि मुस्लिम जाटों की भारी संख्या भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में रहती है, जहां से इन नेताओं को बुलाया गया था.

भाईचारा बैठक में समाज को धर्मों और जातियों में बांटने और तोड़ने की बात की गयी,देश का सामाजिक ताना बाना छिन्न भिन्न करने की एक बार फिर भरपूर कोशिश जारी है, चूंकि एक पार्टी को नफरत और तोड़ फोड़ की सियासत रास आगई है. और जब तक साम्प्रदायिकता और नफरत की सियासत का लाभ इस पार्टी को मिलता रहेगा तब तक वो इसी फॉर्मूले पर काम करती रहेगी. देश के गृहमंत्री ने बैठक में कहा 2014, 17 फिर 19 में आपने बीजेपी को जिताया, 2022 में जीता दीजिये फिर आपको मांगने की जरुरत नहीं पड़ेगी, अब वहां उनसे यह सवाल करने वाला कोई नहीं था, की क्या मांगने की जरुरत नहीं पड़ेगी?

धर्म निरपेक्षता, एकता औरअखंडता की शपथ लेकर मंत्री पद लेने वाले क्या चुनाव के दौर में अपनी मर्जी से पार्टी प्रचार करने केलिए आजाद हैं? चुनावी दौर में उनपर अपने पद की कोई जिम्मेदारी नहीं है. संविधान की कोई गरिमा नहीं है? क्या उनपर कोई कानून लागू नहीं होगा? क्या इन मंत्रियों को अनेकों प्रकार की सुविधाएँ पार्टी प्रचार के लिए दी गयी हैं, क्या उनकी सिक्योरिटी पर जनता का करोड़ों रुपया पार्टी प्रचार के लिए खर्च किया जाना चाहिए.

पार्टी प्रचार का काम पार्टी के प्रदेश संगठन का है, सूबे के पदाधिकारी अपने प्रदेशों के चुनाव देखें, केंद्रीय मंत्री अपने काम छोड़कर पार्टी के लिए लगे पड़े हैं, गृहमंत्री घर घर पर्चे बाँट रहे हैं,यहाँ तक की प्रधानमंत्री भी अपनी सीट और कलमदान छोड़कर पार्टी प्रचारक की हैसियत से काम कर रहे हैं, इनके लिए कोई कानून वानून है या नहीं, अंधेर नगरी और चौपट राज में बचता कोई नहीं है, इसको न भूल जाना प्रिये भारत वासियो.

जबतक आप संसद या विधान सभा में नहीं पहुंचे हैं, सारे खुराफात संविधान और नैतिकता के दायरे में करें. देश को कोई ऐतराज नहीं, लेकिन जैसे ही आप संवैधानिक पद की शपथ लेते हैं आपको सिर्फ राजधर्म को निभाना होगा, अब राष्ट्र सर्वोपरि होना चाहिए, पार्टी, धर्म, मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा, शमशान, कब्रस्तान, गुजरती, बंगाली, मराठी, पटेल, पंडित, मिर्जा, कुर्मी, बघेल, राजपूत, दलित, यादव या जाट नहीं चलेगा, क्योंकि देश सर्वोपरि है, है की नहीं? या यह वक्तव्य सिर्फ जनता के लिए है, पहले तो संवैधानिक पदों पर ब्राजमान पाखंडियों के लिए है न?

देश के ग्रहमंत्री ने अलीगढ़ में कहा था अगर UP में समाजवादी की सरकार आई तो आजम जेल से बाहर आजायेगा, अरे! तो फिर क्या होगा? क्या आजम खान अपने सारे मुखालिफों को फांसी चढ़ा देगा, क्या आसमान फट जायेगा? क्या उसके बाहर आने से देश का कानून काम करना बंद कर देगा? नेता जी देश की अवाम को डराने और धमकाने की सियासत का ढोंग बंद कर देना चाहिए.अगर कोई अंदर गया है तो कानूनी प्रक्रिया के तहत गया होगा, हमें नहीं पता और बाहर आएगा तो भी कानूनी प्रक्रिया के तहत आना चाहिए,और अगर ऐसा नहीं है तो क्या जरुरत है. लोकतंत्र और संविधान का ढोंग करने की, राजशाही निजाम का बाकायदा ऐलान क्यों नहीं होता? हालाँकि रफ्ता रफ्ता देश और दुनिया, एजेंडा 21 और new world order की तरफ बढ़ रही है. जिसमें लोकतंत्र नहीं राजतंत्र चलेगा, अब ऐसा नहीं है की दज्जाली निजामे हुकूमत में एक धर्म या जाती के खिलाफ कोड़ा चलेगा, और बाकियों की मस्ती,बल्कि कुल जनता गुलाम होगी, मस्ती सिर्फ राजशाही तंत्र में शामिल लोग ही करेंगे जिसकी बानगी अच्छे दिन के सत्ता काल में देखने को मिल रही है.

किसान नेता राकेश टिकैत ने अपने कई इंटरव्यू में इस बात की तरफ साफ इशारा कर दिया है की केंद्र और प्रदेशों में बैठी सरकारें किसान, मजदूर, नौजवान, आदिवासी, दलित और अल्पसंख्यक विरोधी हैं, और जनता अपने हिसाब से आगामी सभी चुनावों में सबक सिखा देगी, हालाँकि उन्होंने खुलकर किसी की किसी की मुखालफत या समर्थन की बात नहीं करी है, जिससे एक भ्र्म भी बना हुआ है, जिस तरह आंदोलन के दौरान एक खास पार्टी के विरोध का ऐलान किया था, आज भी करते तो तस्वीर साफ हो सकती थी. लेकिन एक बात जो उन्होंने साफ तौर से कही, उन्हीं के अंदाज में पेश है "कि तोड़ फोड़ और साम्प्रदायिकता करने वाली राजनीती अब देश में नहीं चलने वाली. साम्प्रदायिकता का फोटो बनाके इसको शोकेस में रख दें सांप्रदायिक पार्टियां, अब न चले यो, इसको सीसे में पैक करके रख दो, ताकि आने वाली नस्लों को याद दिला सको कि देश में सांप्रदायिक पार्टी की सरकार हिन्दू मुस्लिम, कब्रस्तान और शमशान तथा जिन्नाह के नाम पर बनाई गयी थी".

टिकैत ने कहा "साम्प्रदायिकता के पुराने मॉडल के इंजन को बार बार स्टार्ट करना चाहते हैं कुछ लोग, और किसान पानी लिए बैठा, वो इंजन में पानी डाल दे. स्टार्ट न होने देता साम्प्रदायिकता के इंजन को. देश में एक खास पार्टी के प्रत्याशियों को दौड़ाया जा रहा है,इससे उनकी हालत ख़राब है", पर ये कभी भी ऐसा खेल खेल सकते हैं जिससे चुनाव पूरी तरह से धुर्वीकृत हो जाएँ, जिसमें नुकसान पूरे देश का है किसी एक कौम या धर्म का नहीं. तूफान से पहले तैयारी अकलमंदी की अलामत होती है, वरना उसके बाद तो, अब पछताए क्या होत है जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत वाली बात ही सच होती है.

Editor/Owner/Printer/Publisher: Ali Aadil Khan, K-2-A-001, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar, Okhla, ND - 25. **Printed at :** Shobi Offset Press, 2818, Gali Gadhiaiya, Kuchachalan, Daryaganj, ND. - 2

तेजस्वी की जगह खान सर ने ली, तेज प्रताप भी सक्रिय

आरआरबी एनटीपीसी परीक्षा को लेकर पिछले कई दिनों से बिहार में हंगामा बरपा हुआ है. राजधानी पटना सहित कई जगहों पर उपद्रव, तोड़फोड़, ट्रेनों में आगजनी जैसी घटनाओं के बाद आज बिहार बंद का आयोजन किया गया है.रेल मंत्रालय की ओर से छात्रों की मांगों को मंजूर कर लिए जाने के बावूजद हो रहे विरोध प्रदर्शन में छात्रों से कहीं अधिक विपक्षी दलों के कार्यकर्ता दिख रहे हैं. राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) की अगुआई में महागठबंधन के घटक दलों के कार्यकर्ता पटना, वैशाली, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, औरंगाबाद समेत बिहार के सभी शहरों में जगह–जगह प्रदर्शन और मनमानी कर रहे हैं.

बिहार में जब युवा सड़कों पर हैं और आंदोलन कर रहे हैं. वहीं, इनकी आड़ में उपद्रवी माहौल बिगाड़ने की ताक में दिख रहे हैं. ऐसे में जो बात सबसे अधिक हैरान करती है वह है मुख्यमंत्री से लेकर नेता विपक्ष की चुप्पी. आरजेडी कार्यकर्ता भले ही सड़कों पर उतरकर जगह–जगह प्रदर्शन और हंगामा कर रहे हैं. लेकिन विपक्ष के नेता और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव पिछले एक पखवाड़े से सियासी मैदान से दूर दिख रहे हैं. हाल ही में शादी के बंधन में बंधे तेजस्वी यादव सोशल मीडिया और ट्विटर से भी दूर हैं.

तेजस्वी यादव ने 1 जनवरी को नए साल की शुभकामनाएं देने के बाद से कोई ट्वीट नहीं किया है. 3 जनवरी को आखिरी बार उन्होंने एक रिट्वीट किया था. लेकिन उसके बाद से लगातार उनके ट्विटर हैंडल पर सन्नाटा है. छात्र आंदोलन के बीच तेजस्वी यादव की चुप्पी इसलिए भी अधिक हैरान करती है, क्योंकि वह लगातार खुद को युवाओं के नेता के रूप में पेश करते रहे हैं.

छात्रों के इस आंदोलन में जहां विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव के सक्रिय होने की उम्मीद की जा रही है तो वहीं उनकी जगह खान सर और पटना के दूसरे कुछ कोचिंग संचालक लेते दिखे हैं. छात्रों को उकसाने के आरोप से इनकार कर रहे खान सर इस आंदोलन का प्रमुख चेहरा बनकर उभरे हैं. हालांकि, छात्रों को उकसाने के आरोप में पुलिस ने उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है. वहीं, तेजस्वी के छोटे भाई तेज प्रताप जरूर कुछ हद तक सक्रिय दिख रहे हैं. वह लगातार सोशल मीडिया के सहारे छात्रों के आंदोलन का समर्थन करते हुए सरकार पर निशाना साध रहे हैं.

एक तरफ जहां विपक्ष के नेता आंदोलन से दूर हैं तो दूसरी तरफ राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी अब तक चुप्पी साध रखी है. 25 जनवरी से ही चल रहे आंदोलन को लेकर अब तक उनकी तरफ से कुछ नहीं कहा गया है. राज्य के अभिभावक के रूप में अब तक ना तो उन्होंने छात्रों से शांति की अपील की है और ना ही उपद्रव पर कुछ प्रतिक्रिया दी है. हालाकिं, उनकी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने गुरुवार को कहा कि बिहार और यूपी में छात्रों का उत्तेजक होना आरआरबी एनटीपीसी परीक्षा प्रक्रिया व परिणाम में गड़बड़ी के विरुद्ध प्रतिक्रिया है. रेलवे भर्ती बोर्ड की गड़बड़ियों को देखने के लिए जांच कमिटी बनाई गई है. छात्रोंध्उम्मीदवारों के साथ अतिशीघ्र न्याय की उम्मीद करता हूं. उन्होंने खान सर से भी केस वापस लेने की मांग की.

इस बीच, बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी ने मोर्चा संभाला और गुरुवार को उन्होंने रेल मंत्री से बात करके छात्रों को बताया कि सरकार उनकी मांगों को पूरा करने जा रही है. भाजपा सांसद सुशील कुमार मोदी ने भारत के रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात के बाद बताया कि रेल मंत्री ने उन्हें आश्वस्त किया कि ग्रुप–डी की दो की बजाय एक परीक्षा होगी और एनटीपीसी की परीक्षा के 3.5 लाख अतिरिक्त परिणाम 'एक छात्र–यूनिक रिजल्ट' के आधार पर घोषित किए जाएंगे. रेलमंत्री ने गुरुवार भरोसा दिलाया कि सरकार छात्रों से सहमत है और उनकी मांग के अनुरूप ही निर्णय जल्द किया जाएगा. सुशील मोदी की ओर से यह जानकारी दिए जाने के बाद ही अधिकतर छात्र शांत हो गए हैं प्रदर्शन में उनकी भागीदारी बेहद कम है.

फिल्म अपहरण से प्रभावित होकर 11वीं के छात्र की हत्या

दिल्ली के बुराड़ी इलाके में बॉलीवुड फिल्म अपहरण से प्रभावित होकर युवकों ने दस लाख की फिरौती वसूलने के लिए 11वीं के छात्र से पहले दोस्ती की, फिर जन्मदिन की पार्टी के बहाने बुलाकर उसकी हत्या कर दी. आरोपी मृतक के परिवार से फिरौती मांग पाते इससे पहले पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया. उनकी निशानदेही पर एक कमरे के अंदर से युवक का शव बरामद किया गया.

जिला पुलिस उपायुक्त सागर सिंह कलसी ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान बुराड़ी कमालपुर निवासी गोपाल (19) और चंदर विहार के सुशील (19) के रूप में हुई है. दोनों आरोपी मूलरूप से यूपी के अमरोहा के रहने वाले हैं. जिस छात्र की हत्या की गई उसकी शिनाख्त चंदन विहार निवासी रोहन (18) के रूप में हुई है. 23 जनवरी की रात पुलिस को चंदन विहार निवासी रोहन के

लापता होने की शिकायत मिली. कारोबारी मनोज ने बताया कि उनका बेटा रोहन शाम को अपने दोस्त गोपाल के साथ जन्मदिन की पार्टी में गया था. पुलिस ने गोपाल से संपर्क किया. उसने बताया कि वह रात दस बजे ही पार्टी से चला गया था. जबकि जांच में रोहन के मोबाइल की लोकेशन मुरादाबाद (यूपी) में मिली.

रोहन को शोरूम में देख अपहरण की रची साजिशः आरोपी गोपाल ने बताया वह बुराड़ी स्थित एक शोरुम में सफाई का काम करता है. रोहन अपने पिता के साथ शोरूम में खरीददारी करने जाता रहता था. उसने सोचा कि रोहन का अपहरण कर लिया जाय तो मोटी रकम मिलेगी.

गोपाल ने फिल्म अपहरण देखने के बाद अपने दो दोस्तों को वारदात में शामिल होने के लिए राजी किया. आरोपियों ने एक साल पहले रोहन से दोस्ती की थी. 16 जनवरी को गोपाल ने एक कमरा किराए पर लिया. 23 जनवरी की शाम गोपाल जन्मदिन की पार्टी के बहाने रोहन को कमरे पर ले गया. यहां पार्टी करने के बाद गोपाल और उसके दोस्तों ने रोहन का गला घोंट दिया.

वारदात के बाद कमरे का दरवाजा बाहर से बंद करने के बाद आरोपी वहां से निकल गए. मगर जब उन्हें पता चला कि रोहन के अपहरण की शिकायत पुलिस से कर दी गई है तो उन्होंने फिरौती नहीं मांगी. उनमें एक आरोपी पुलिस से बचने के लिए रोहन का मोबाइल लेकर मुरादाबाद चला गया और लगातार अपना ठिकाना बदलने लगा.

जांच के दौरान पुलिस ने सौ से अधिक सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली और मृतक के मोबाइल की कॉल डिटेल व लोकेशन देखी. इससे पुलिस को गोपाल की बातों पर शक हुआ. गोपाल को हिरासत में लेकर सख्ती से पूछताछ की गई तो उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया. पुलिस ने उसकी निशानदेही पर हरित विहार से रोहन का शव बरामद किया. इस दौरान दूसरे आरोपी सुशील को भी गिरफ्तार कर लिया गया.

NOTICE:

Times of Pedia does not guarantee, directly or indirectly, the quality or efficacy of any product or services described in the advertisements or other material which is commercial in nature in this Newspaper. Furthermore, Times of Pedia assumes no responsibility for the consequences attributable to inaccuracies or errors in the printing of any published material from the news agencies or articles contributed by readers. It is not necessary to agree with the views published in this Newspaper. All disputes to be settled in Delhi Courts only.

दिशाहीन है केन्द्रीय आम बजट डॉ० सुरेश पासवान

औरंगाबादः बिहार सरकार के पुर्व मंत्री एवं राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश उपाध्यक्ष, डा0 सुरेश पासवान ने कहा है कि 2022 2023 का केंद्रीय आम बजट जो आज संसद में वित मंत्री द्वारा पेश किया गया है. वह पूर्ण रूपेन दिशाहीन है. इस बजट में न तो बेतहाशा बढ़ती मंहगाई को कम करने की कोई चर्चा है, न ही बेरोजगारों के लिए रोजगार सृजन का जिक्र है.

किसान और कृषि को तो बिल्कुल ही अनदेखा किया गया है. एम0एस0पी0 गारंटी कानून बनाने पर तो एक शब्द भी नहीं बोला गया. जिसके लिए 13 महीने तक देश के किसानों ने आंदोलन किया. स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कोई आधारभूत बात नहीं किया गया, जबकि कोरोना महामारी ने विगत दो वर्षो से स्वास्थ्य और शिक्षा को जिस तरह से बर्बाद किया है.

सबसे ज्यादा इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए था. लेकिन वर्तमान मोदी सरकार के प्राथमिकता में आम आदमी का कोई स्थान नहीं है. यहां तो सिर्फ कारपोरेट घरानों का बल्ले बल्ले है.

–अजय कुमार पाण्डेय

Mind Brain Institute organized Media meet on mental health and wellbeing

We are a USA based founder @Dr Anuranjan Bist, @Dr Nazim Ali Idrisi Brand Ambassador Aleksandra Matczak – Grabska and Charu Das, CD Foundation Spoke to the media to introduce different aspects of treatment available in Mind Brain Institute. Dr Anuranjan Bist said after working in Las Vegas, America for more than a decade I have got this TMS treatment to India which is FDA Approved, Non Invasive no Surgery and no medicine required.

Dr Nazim Ali Idrisi said we have customized the treatment according to India the rate are highly subsidized @Transcranial Magnetic Stimulation. The TMS device delivers MRI strength magnetic pulses to the area of the brain known to regulate mood.

The pulses, delivered in 10-second intervals, feel like tapping on the scalp but without the sensation of anything touching the skin. During the session, you can listen to music, watch television, or simply sit back and relax.

Charu Das, @CD Foundation said During these difficult times it is important to take good care of your mental health. Healthy Brain is Happy Life.

-Sunit Narula

पटपड़गंज विधानसभा में चल रहे विकास कार्यो को लेकर की गई महत्वपूर्ण बैठक

दिल्ली पटपड़गंज रू दिनांक ३० जनवरी रविवाररू कैंप ऑफिस पटपड़गंज विधानसभा में चल रहे विकास कार्यो को लेकर एक बैठक की गई, जिसमे विधानसभा के सभी कार्यो को और कैसे बेहतर किया जाये इसकी समीक्षा की गई। बैठक में विधानसभा से आने वाले निगम पार्षद , अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आदि मौजूद रहे। पिछले 8 दिनों में पटपरगंज से विधायक मनीष सिसोदिया की टीम ने 32 स्थानों का दौरा किया है जहां विकास कार्य या तो चल रहे हैं या कुछ समय पहले ही शुरू हुए हैं। टीम ने दिल्ली जल बोर्ड के अधिकारियों के साथ दिल्ली जल बोर्ड से जुड़े कार्यों की समीक्षा भी की। पिछले हफ्ते ही विधायक टीम ने, मयूर विहार फेज 2 के पॉकेट बी में चल रहे इंटरनल लेन में टाइल्स लगाने के कार्य का निरिक्षण किया था। अब वो काम पूरा हो चूका है, उस पुरे एरिया में टाइल्स लग चुकी है।

फिट रहना स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसी को ध्यान में रखते हुए मेरी विधायक टीम ने आप निगम पार्षद गीता रावत के साथ भामाशाह पार्क में एक नए जिम का उद्घाटन किया। लोग जल्द ही इस जिम का इस्तेमाल कर पाएंगे। खिचड़ीपुर के टी कैंप के पास अक्सर बरसात के मौसम में जलभराव की समस्या हो जाती थी। इसके समाधान के लिए खिचड़ीपुर विलेज के टी कैंप से मैन रोड खिचड़ीपुर विलेज तक (गोस्वामी मार्ग) गली और नाली बनाने के निर्माण कार्य की शुरुआत डस्। टीम ने की।

पटपड़गंज के प्रताप नगर के गली नंबर 1`म 8 तक पानी और सीवर की लाइन डाली जाएगी। उसी कार्य की शुरुआत भी डस्। टीम द्वारा किया गया। रेलवे कॉलोनी के गली दव. 1,11 ,12 ,13 में चल रहे सीवर के काम भी डस्। टीम ने अधिकारीयों के साथ वहां जा कर निरक्षण किया और समय पर काम समाप्त करने का आदेश दिया। डस्। टीम ने भारत के स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के उपलक्ष्य में ट्रैज्ञट ईस्ट विनोद नगर स्कूल में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। पटपड़गंज विधानसभा के मयूर विहार फेज 2 के पॉकेट । में बंदंतं बैंक के पास 115 फीट ऊँचाई वाले तिरंगे लगाया गया। पुरे विधानसभा में 3 स्थानों पे तिरंगा लगाया गया है।

—फरहान सिद्दकी

This is the thing we couldn't capture, this is our nature

Nameera Mirza, Class VIII
Hamdard Public School, New Delhi

When I feel it that makes me delighted,
It distracts me from being sleepy,
When wind passes by me it's like my soul getting exhilarating,
Let this thing wash all sadness,
This is the thing we couldn't capture this is our nature,
Save it, have it, protect It, these grasses glitters with dew,
These clouds are cotton candy by looking,
These shiny stars wanna make it mine,
These trees are happiness makes me restless,
This is the thing we couldn't capture this is our nature,
Seeing those shiny night skies my feet refuse to move,
This rain made me pluviophile, uncountable views my feet refuse to move,
Those beautiful sunsets those nebulous views of sunrise,
This is the thing we couldn't capture this is our nature,
Those chilly and fresh days of winter,
Those petrichor days, those aurora's of morning skies,
Those euphoric feeling of first snow,
Oh I enjoyed the beauty of nature and made me philocast,
This is the thing we couldn't capture this is our nature.

Adobe Illustrator Course in Delhi

Rohini, New Delhi

EVENT INFORMATION :

Graphic Design Institute is a leading Graphics and Animation Institute in Delhi, which offers 50+ high-level courses. An Adobe Illustrator course in Delhi that would teach its students all the tools and functionality of the adobe Illustrator software to use for designing. The student will be able to learn Illustrator at expert level skills by learning this course.

Graphic Design Institute in Delhi has well-trained and highly experienced trainers who are both friendly and courteous and ready to train using Live projects and the interactive training method...

COURSE OUTLINE :
Introduction to Adobe Illustrator Interface
Introduction to Design
Use of Adobe Illustrator for Illustration
Use of Adobe Illustrator for Graphic Design
Use of Adobe Illustrator in Design Pipeline.

Training Mode - Classroom | Online
- Regular - 45 Days
- Fasttrack - 15 Days
- Crash - 10 Days

FOR MORE INFORMATION
Website - https://graphicdesigninstitutes.com/adobe-Illustrator-advanc
e-course
Contact - +91-7838370333 | 7683072463

मुलायम सिंह की छोटी बहू अपर्णा यादव ने योगी आदित्यनाथ को बताया सबसे अच्छा मुख्यमंत्री

हाल ही में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) में शामिल हुईं समाजवादी पार्टी (सपा) के संस्थापक मुलायम सिंह यादव की छोटी बहू अपर्णा यादव ने योगी आदित्यनाथ को यूपी का अब तक का सबसे अच्छा मुख्यमंत्री बताया है. अपर्णा यादव ने यहां तक कहा कि वह योगी आदित्यनाथ को मुलायम सिंह यादव और अखिलेश यादव सहित सभी मुख्यमंत्रियों से बेहतर मानती हैं. अपर्णा ने कहा कि योगी एकमात्र ऐसे मुख्यमंत्री हैं, जो विकास के साथ अपने मूल्यों और संस्कृति को नहीं भूले और दोनों को साथ लेकर आगे बढ़े.

एक टीवी इंटरव्यू में अपर्णा यादव ने कहा, श्योगी जी ने अपने कल (बीते हुए) को नहीं छोड़ा है, राममंदिर का आंदोलन महराज अवैद्यनाथ जी के निर्देश में चालू हुआ था, आज राममंदिर का निर्माण हो रहा है, ना इन्होंने जो कल (आने वाले) की सोच है, चाहे पॉलिटेक्निक कॉलेज हो, मेडिकल कॉलेज हों, को छोड़ा है, यह संगम हमारे सीएम योगी जी में देखने को मिलता है, आज तक मैंने नहीं देखा कि यूपी का कोई ऐसा सीएम बना हो जिसने ना अपने संस्कार छोड़े हों और ना ही कल की चिंता छोड़ी हो.

आपके परिवार में तो सीएम हुए हैं, मुलायम सिंह यादव जी भी सीएम हुए, क्या वे भी ऐसे मुख्यमंत्री नहीं थे, श्मैं तो कह रही हूं कि बाबा जी जितना अच्छा मुख्यमंत्री कोई नहीं हुआ, बिल्कुल नहीं थे. श अपर्णा ने कहा, श्मैं हिंदू राष्ट्र में एक हिंदी बोलने वाली व्यक्ति हूं, मेरे लिए बहुत जरूरी था कि रामंदिर बने, मैंने चंदा भी दिया, अब इसको किसी भी रूप में देखें. जिस तरह विकास के साथ उन्होंने पुरानी चीजें नहीं छोड़ी, यह बड़ी बात है. 27 मेडिकल कॉलेज बने, 29 पॉलिटेक्निक कॉलेज बने, कोविड काल में पूरे विश्व का एजुकेशन सिस्टम चरमरा गया, लेकिन भारत में खासकर यूपी में जब ये कॉलेज बन रहे हैं तो बाबा जी ने इस बात का बहुत ध्यान रखा है कि हमें एजुकेशन पर फोकस करना चाहिए.

क्या इस धर्म और संस्कृति को अखिलेश यादव, मुलायम सिंह यादव नहीं मान रहे थे? यह पूछे जाने पर अपर्णा ने कहा कि यह तो उन लोगों से जाकर पूछिए. मैं अपनी पार्टी की बात कर रही हूं. मैं तारीफ कर रही हूं योगी जी की, ना उन्होंने कल को छोड़ा, ना पुरानी चीजें छोड़ी, वह वर्तमान की राजनीति के साथ धार देते हुए बढ़ रहे हैं, युवाओं की तरक्की के लिए बहुत सोचते हैं, यह पहले किसी मुख्यमंत्री में नहीं था.

—एजेंसी

सरकार चलाना ना आए तो आप पार्टी को बर्बाद कर दोगे

लखनऊः उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है, लेकिन अभी भी तमाम नेताओं के बीच बयानबाजी जारी है. इस बीच समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव का एक बयान सामने आया, जिसमें वो एक टीवी पत्रकार को कहा कि अब वो उनके चैनल पर नहीं बैठेंगे. वहीं, यादव के इस बयान पर भारतीय जनता पार्टी ने उनपर तंज कसा और कहा कि वो चुनाव में दिख रही हार से बौखला गए हैं.

बता दें कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव न्यूज चौनल टीवी9 भारतवर्ष के एक कार्यक्रम में पहुंचे थे. यहां वो एक एंकर से नाराज हो गए और कहने लगे कि अब आपका टाइम खत्म हो गया है, इसलिए मैं जाना चाहता हूं और मैं अब आपके चौनल पर कभी नहीं बैठूंगा. ये मेरा आखिरी इंटरव्यू है, इसके मैं नहीं बैठूंगा. इसके बाद जब एंकर ने यादव से दोबारा सवाल किया तो उन्हें गुस्सा आ गया. ऐसे में वो कहते नजर आए को आप लोग बायस्ड हैं. मैं नहीं बैठूंगा. उन्होंने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा कि यूपी में विकास को लेकर आप कुछ नहीं पूछ रहे और भाजपा में जो अपराधी हैं, उनका नाम भी नहीं ले रहे. यूपी को जिस तरह से बर्बाद किया गया, आपने उसके बारे में सवाल नहीं किया. बाद में अखिलेश यादव एंकर से ये भी कहते हुए नजर आए कि आपने तो आधे घंटे का समय मांगा था और मैं इससे अधिक नहीं बैठूंगा. मेरा समय हो चुका है, इसलिए मैं जा रहा हूं.

वहीं, अखिलेश यादव के इस इंटरव्यू को लेकर उत्तर प्रदेश भाजपा ने ट्वीट किया है. ट्वीट में एक छोटा का वीडियो भी है. वहीं, कैप्शन में लिखा है, चुनाव में दिखती साफ हार से अखिलेश यादव बौखला गए हैं. उन्हें पता चल चुका है कि वो हार रहे हैं. इस वजह से गुस्सा उनकी नाक पर साफ दिखाई दे रहा है. बताते चलें कि 10 फरवरी से उत्तर प्रदेश की 403 विधानसभा सीटों के लिए सात चरणों में मतदान होना है. यहां 14, 20, 23, 27 फरवरी, 3 और 7 मार्च को अन्य चरणों में मतदान होगा, जबकि 10 मार्च को चुनाव के नतीजे सामने आएंगे.

—एजेंसी

अमित शाह के बयान पर रालोद प्रमुख जयंत चौधरी ने पलटवार

मुजफ्फरनगरः अमित शाह के बयान पर रालोद प्रमुख जयंत चौधरी ने पलटवार किया है. उन्होंने कहा कि मैं कोई चवन्नी नहीं हूं कि पलट जाऊं. फिर अगर बात भाई चारे की है तो इससे कौन मना करता है.आज अमित शाह कह रहे हैं कि वह गलत घर में चले गए हैं लेकिन तब कहां ये लोग गए थे. जब किसानों को कुचला जा रहा था. वो तब भी मंत्री थे जब किसानों का आंदोलन चल रहा था और आज भी मंत्री ही बनकर बैठे हैं.

जयंत चौधरी का ये जवाब अमितशाह के उस बयान पर है जिसमें उन्होंने कहा था कि जयंत चौधरी के हम भी चाहते थे लेकिन वह गलत घर में गए हैं. अमितशाह एक दिन पहले पश्चिमी उत्तर प्रदेश के दौरे पर थे. उन्होंने इस दौरान जाट बिरादरी की नाराजगी दूर करने के लिए जाट नेताओं से मुलाकात की थी. इस दौरान जहां उन्होंने जाटों की वजह से 2014 और 2017 में जीत होना बताया. वहीं उन्होंने कहा कि जाटों ने हमेशा ही कमल खिलाया है और इस बार भी वह कमल ही खिलाएंगे. इस दौरान ही उन्होंने जयंत चौधरी को गलत घर में जाने वाला बताया था. जिस पर जयंत ने अब पलटवार किया है.

रालोद ने सपा से गठबंधन किया है. रालोद का प्रभाव पश्चिमी उत्तर प्रदेश में है. लिहाजा सपा ने ज्यादातर सीटें रालोद को दी हैं. सपा का वोटबैंक मुस्लिम और यादव माना जाता है जबकि रालोद का वोटबैक जाट बिरादरी मानी जाती है. पश्चिमी उत्तर प्रदेश की सीटों का भाग्य जाट और मुस्लिम मतदाता ही तय करते हैं. ऐसे में सपा ने जहां दोनों को अपने पाले में करने के लिए रालोद से गठबंधन किया है. वहीं तीन कृषि कानून के चलते जाटों की नाराजगी दूर करने का अमितशाह प्रयास कर रहे हैं. हालांकि ऊंट किस करवट बैठेगा. ये चुनाव परिणाम ही बताएंगे.

—एजेंसी

यूपी विधान सभा चुनाव से पहले दल-बदल की सियासत है जारी

लखनऊ' हर पार्टी अपना खेमा मजबूत करने में जुटी है और ऐसे में नेता भी अपने लिए बेहतर मौका खोज रहे हैं. पूर्व केंद्रीय मंत्री आरपीएन सिंह के भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) में जाने के बाद कानपुर और फतेहपुर की राजनीति में प्रभाव रखने वाले पूर्व सांसद राकेश सचान ने कांग्रेस को छोड़ भाजपा में शामिल हो गए हैं. अब चर्चा है कि कांग्रेस को उत्तर प्रदेश में एक और बड़ा झटका लगने जा रहा है. कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और अभिनेता राज बब्बर एक बार फिर सपा में शामिल होने की अटकलें हैं. बताया जा रहा है कि जल्द ही सपा में घर वापसी करेंगे.

दरअसल, कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और अभिनेता राज बब्बर के सपा में आने की चर्चा तब तेज हो गई जब सपा के प्रवक्ता फखरुल हसन चांद ने सोशल मीडिया एप कू पर एक पोस्ट कर दिया. उन्होंने पर इशारा करते हुए लिखा, कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, पूर्व समाजवादी नेता, अभिनेता जल्दी ही समाजवादी होंगे. कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष , पूर्व समाजवादी नेता अभिनेता जल्दी ही समाजवादी होंगे पार्टी के प्रवक्ता फखरुल हसन चांद ने जो तीन शब्दों में इशारे किए हैं वे सभी राज बब्बर की ओर इंगित कर रहे हैं. ऐसे में राज बब्बर के सपा में शामिल होने की सियासी चर्चाएं तेज हो गई हैं. राज बब्बर कांग्रेस में 2019 के लोकसभा चुनाव के बाद से ही वह साइडलाइन चल रहे हैं. कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और अभिनेता राज बब्बर ने राजनीतिक करियर की शुरुआत जनता दल से की थी. फिर वह समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए थे. 1994 में सपा ने उन्हें राज्यसभा भेजा गया. 2004 में सपा के टिकट पर ही जीतकर पहली बार लोकसभा पहुंचे. 2006 में उन्होंने सपा से नाता तोड़ लिया और करीब दो साल बाद 2008 में कांग्रेस का दामन थाम लिया था.

2009 के लोकसभा चुनाव में उन्होंने कांग्रेस के टिकट पर फिरोजबाद सीट से अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव को हराया था. 2014 में कांग्रेस ने उन्हें गाजियाबाद सीट से जनरल वीके सिंह के खिलाफ उतारा, लेकिन राज बब्बर को हार का सामना करना पड़ा. 2016 में उन्हें यूपी कांग्रेस की कमान दी गई थी. राज बब्बर यूपी के टुंडला के रहने वाले हैं. उन्होंने 250 से अधिक हिंदी फिल्मों में काम किया, जिनमें कई सुपरहिट भी हुईं.

सिद्धू की बड़ी बहन सुमन तूर अपने भाई पर लगाए गंभीर आरोप

चंडीगढ़ः क्रिकेटर से नेता बने पंजाब कांग्रेस प्रमुख नवजोत सिंह सिद्धू की बड़ी बहन सुमन तूर ने शुक्रवार को एक बड़ा खुलासा करते हुए अपने भाई पर गंभीर आरोप लगाए हैं. पूर्व क्रिकेटर की बहन ने आरोप लगाया कि 1986 में अपने पिता भगवंत सिंह की मौत के बाद सिद्धू ने अपनी बूढ़ी मां को घर से बाहर निकाल दिया था. चंडीगढ़ में मीडिया से बात करते हुए 70 वर्षीय सुमन तूर – जो अमेरिका में रहती हैं – ने दावा किया कि उनकी मां की मृत्यु 1989 में एक बेसहारा महिला के रूप में हुई थी. सुमन तूर का यह बयान ऐसे समय में आया है जब पंजाब विधानसभा चुनाव का प्रचार अभियान जोरों पर है. उधर नवजोत सिंह सिद्धू पर उनकी बहन सुमन के द्वारा लगाए गए आरोपों पर सिद्धू की पत्नी नवजोत कौर ने कहा कि सिद्धू के पिता की दो शादियां हुई थी और उनकी पहली बीवी से 2 बेटियां थी और सिद्धू और वो उनके बारे में नहीं जानते हैं.

मीडिया से बात करते हुए सुमन तूर भावुक हो गईं. उन्होंने कहा, मेरे पिता की मौत 1986 में हुई थी और इसके बाद उन्होंने स्पष्ट रूप से मेरी माँ से कहा था कि आपके लिए इस घर में कोई जगह नहीं है. घर खून पसीने और आँसुओं से बनाया गया था क्योंकि मेरे माता–पिता की तबियत ठीक नहीं था. उसके बाद (घर से निकाल दिए जाने के बाद) मेरी मां ने उनसे कभी कुछ नहीं पूछा.श तूर ने दावा किया कि उनकी मां की 1989 में एक रेलवे स्टेशन पर मृत्यु हो गई थी. सुमन तूर ने कहा, श्हमने बहुत कठिन समय देखा है. मेरी मां चार महीने से अस्पताल में थीं. मैं जो कुछ भी दावा कर रही हूं मेरे पास उसके दस्तावेजी सबूत हैं.

सुमन ने कहा, श्एक साक्षात्कार में, उसने (सिद्धू) दावा किया कि मेरे माता–पिता दो साल की उम्र में न्यायिक रूप से अलग हो गए थे. क्या वह दो साल का दिखता है? (एक तस्वीर रखता है). नवजोत सिद्धू के इस दावे के बाद हमारी मां ने अदालत का दरवाजा खटखटाया था. मेरी मां लुधियाना गई और उससे पूछा कि क्यों आप ऐसे झूठ कह रहे हैं? उसने कहा कि उन्होंने यह नहीं कहा, किसी और ने कहा था. लेकिन जब हमने मीडिया हाउस के खिलाफ मामला दर्ज किया, तो वह अदालत में पेश नहीं हुए.

सुमन तूर ने दावा कि उन्होंने सिद्धू ने मिलने का प्रयास किया लेकिन उसने मिलने से इंकार कर दिया. सुमन ने कहा, श्सिद्धू से संपर्क करने में विफल होने के बाद मुझे एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करने के लिए मजबूर होना पड़ा. उसने मुझे अपने फोन पर ब्लॉक कर दिया है. उसके नौकर भी दरवाजे नहीं खोलते हैं. मैं अपनी मां के लिए न्याय चाहती हूं.श सुमन के ये आरोप ऐसे समय में आए हैं जब पंजाब में विधानसभा चुनाव का प्रचार अभियान जोरों पर है और इस खुलासे के बाद विपक्ष सिद्धू पर हमलावर हो सकता है. सिद्धू की तरफ से अभी इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है.

–एजेंसी

दलित और मुस्लिम आबादी है तानाशाही हुकूमत के बदलाव के मूड में: लोकदल

लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी सुनील सिंह ने केंद्रीय कार्यालय 8 माल एवेन्यू में भाजपा सरकार द्वारा 5 वर्ष सत्ता में काबिज रहने वाली भाजपा सरकार को घेरा है और प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि भाजपा सरकार के 5 साल में बेरोजगारी, महंगाई, किसान, व्यापारी वर्ग, महिला उत्पीड़न, हत्याएं कानून व्यवस्था ध्वस्त रही है। यही कमाई रही हैं भारतीय जनता पार्टी अपने पूरे कार्यकाल में पूरी तरह से फैल रही है।सरकारों ने अगर 5 साल में ढोंग से काम किया है । सरकार ने 5 साल में लोगों की जिंदगी को आसान बनाने के बजाय पहले से ज्यादा मुश्किल बनाया है। भाजपा सरकार की वजह से बेरोजगारी और महंगाई चरम पर रही है।

सिर्फ झूठी घोषणाएं, झूठे आंकड़े, विज्ञापन और होल्डिंगओं के माध्यम से युवाओं को बेवकूफ बनाया गया। प्रदेश में योगी सरकार के रोजगार के फर्जी आंकड़ेबाजी के प्रोपेगैंडा में खर्च अरबों रुपये, सरकारी मशीनरी इस्तेमाल पर भी लोकदल ने भाजपा सरकार के 5 साल अपने मुंह मिट्ठू बनना बताया है।जनता इनका हिसाब इस चुनाव में लेगी। लाख सरकारी नौकरी रोजगार सृजन का दावा पूरी तरह से हास्यास्पद और फर्जी है। रोजगार का दावा नौकरी देने का पूरी तरह से आधारहीन व झूठा रहा है और आंकड़ों को तोड़ मरोड़ कर प्रचारित पूरे पांच वर्ष जाने के समय में भी गिना रहे है। वास्तव में प्रदेश में जमीनी हकीकत यह है कि युवा व आम नागरिक बेकाबू हो रही बेकारी से 5 साल तक त्रस्त रहा हैं।

यूपी में 71 में 20 से ज्यादा सीटों पर जाटों का प्रभाव

यूं तो पूरे यूपी में जाट समुदाय की आबादी 4 से 6 फीसद के बीच है लेकिन पश्चिमी यूपी के कुल वोटों में इनकी हिस्सेदारी 17 फीसदी तक है.उत्तर प्रदेश की राजनीति समुदायों और जातियों के समीकरणों की डंडियों पर टिकी है. किसी पार्टी को अगर सूबे में सरकार बनानी है तो हर डंडी का संतुलन और उसे मजबूत रखने की कवायद लगातार करनी पड़ती है.

कुछ ऐसा ही हाल है पश्चिमी यूपी का, जहां की दिशा तय करते हैं जाट. इस इलाके में कहा भी जाता है, जिसके जाट, उसी की ठाठ. पश्चिमी उत्तर प्रदेश के खेतों की मिट्टी जितनी उपजाऊ है, जाटों की अहमियत भी उतनी ही भारतीय राजनीति में वैसी ही नजर आती है. यूं तो पूरे यूपी में जाट समुदाय की आबादी 4 से 6 फीसद के बीच है लेकिन पश्चिमी यूपी के कुल वोटों में इनकी हिस्सेदारी 17 फीसदी तक है.

जाट न सिर्फ पश्चिमी यूपी की 71 में से 20 से ज्यादा सीटों पर सीधा असर रखते हैं बल्कि दर्जनों ऐसी सीट हैं, जहां की राजनीतिक दशा और दिशा भी तय करते हैं. 18 लोकसभा सीट भी ऐसी हैं, जहां जाट वोट बहुत ज्यादा मायने रखता है. उत्तर प्रदेश में मेरठ, मथुरा, अलीगढ़, बुलंदशहर, मुजफ्फरनगर, आगरा, बिजनौर, मुरादाबाद, सहारनपुर, बरेली और बदायूं ऐसे जिले हैं, जहां जाटों का खासा प्रभाव है.इसके अलावा सहारनपुर, कैराना, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बागपत, शामली, बिजनौर, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, मुरादाबाद, संभल, अमरोहा, बुलंदशहर, हाथरस, अलीगढ़ और फिरोजाबाद जिले में जाट वोट बैंक चुनावी नतीजों पर सीधा असर डालता है.

यही कारण है कि सपा से लेकर बीजेपी तक, सभी जाटों को अपने पाले में करने के लिए हर तिकड़म लगा रहे हैं.

जहां सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव ने आरएलडी के जयंत चौधरी के साथ गठबंधन किया है. वहीं देश के गृह मंत्री अमित शाह ने 26 जनवरी को लुटियंस दिल्ली में हुई पंचायत में जाटों के साथ मुलाकात कर गिले–शिकवे दूर करने की कोशिश की.

2022 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने पश्चिमी यूपी की 17 सीटों पर जाट उम्मीदवारों को खड़ा किया है तो आरएलडी ने 9 जाट और सपा ने अपने खाते से तीन जाट प्रत्याशियों पर दांव चला है. इसके अलावा बसपा ने भी 10 जाट उम्मीदवारों को टिकट दिया है. कहा जा रहा है कि 19 जाट प्रत्याशियों को और टिकट दिए जा सकते हैं. हालांकि कांग्रेस ने जाट समुदाय पर ज्यादा बड़ा राजनीतिक दांव नहीं चला है. फिलहाल बीजेपी के तीन जाट सांसद हैं और विधानसभा में 14 विधायक जाट हैं. 2017 के चुनाव में सपा, कांग्रेस और बसपा से एक भी जाट विधानसभा नहीं पहुंच पाया था. जबकि रालोद से जीते विधायक ने बीजेपी जॉइन कर ली थी.

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की राजनीति का बात हो और चौधरी चरण सिंह का जिक्र ना आए तो बात अधूरी रह जाएगी. यहां के जाट हमेशा से चौधरी चरण सिंह को आदर्श मानते हुए भावनात्मक रूप से उनके साथ रहे. चौधरी चरण सिंह ऐसे नेता थे, जिनके पास जमीनी सियासत के गुर से लेकर पीएमओ तक का अनुभव था. चौधरी चरण सिंह के बाद उनके बेटे अजीत सिंह ने जाट चेहरे के तौर पर राष्ट्रीय स्तर की राजनीति की और अब उनकी विरासत को जयंत चौधरी आगे बढ़ा रहे हैं.

चौधरी चरण सिंह ने राजनीति की शुरुआत कांग्रेस से ही की थी. 1967 में उन्होंने कांग्रेस का दामन छोड़ दिया और समर्थकों के साथ क्रांति दल नाम से पार्टी बनाई. इसके बाद वह पहले यूपी के गैर–कांग्रेसी मुख्यमंत्री बने और फिर बाद में देश के प्रधानमंत्री बने. उस जमाने में चौधरी चरण सिंह और किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैट के समर्थन के बिना केंद्र में सरकार बनाना भी मुश्किल माना जाता था.

खाप करती हैं जाट वोट का फैसला

पश्चिमी यूपी के जाटों के वोटों का फैसला वहां के नेताओं से ज्यादा खाप पंचायतें करती हैं. जाट समुदाय से जुड़ा कोई भी फैसला लेना हो, तो खाप पंचायतों के पास जाना पड़ता है. ऐसे में किस उम्मीदवार और पार्टी को वोट देना है, इसका फैसला भी खाप पंचायतों में होते हैं. ये खाप पंचायतें भी एक नहीं कई हैं. इनमें सबसे बड़ी है बालियान खाप, जिसके सर्वेसर्वा हैं नरेश टिकैत, जो राकेश टिकैत के भाई हैं. इसके अलावा एक गठवाला खाप भी है. बालियान खाप और गठवाला वो खाप हैं, जिनकी वेस्ट यूपी के जाट समुदाय के बीच पकड़ मजबूत मानी जाती है. इसके अलावा देशवाल खाप, लाटियान खाप, चौगाला खाप, अहलावत खाप, बत्तीस खाप, कालखंडे खाप भी शामिल हैं.

2013 में जब मुजफ्फरनगर दंगे हुए, तो वेस्ट यूपी के सारे समीकरण ध्वस्त हो गए. रालोद का जाट–मुस्लिम समीकरण बिगड़ गया. तब मोदी लहर पर सवार होकर बीजेपी के टिकट पर मुजफ्फरनगर से लोकसभा चुनाव लड़े संजीव बालियान ने दिग्गज जाट नेता अजीत सिंह को मात दी थी. जबकि मुंबई के पूर्व पुलिस कमिश्नर सत्यपाल सिंह ने बागपत से जयंत चौधरी को हराया था. इससे पश्चिमी यूपी में जाट राजनीति की दिशा ही बदल गई थी. 2017 में बीजेपी ने 12 जाट प्रत्याशियों को टिकट दिया था और सभी ने जीत हासिल की थी. यूपी में जब बीजेपी की सरकार बनी तो यहां से तीन जाट चेहरों चौधरी भूपेंद्र सिंह, लक्ष्मी नारायण सिंह और बलदेव सिंह औलख को कैबिनेट में जगह मिली थी

उत्तर प्रदेश में सात चरणों में मतदान होना है. पहले चरण में 10 फरवरी को 11 जिलों की 58 सीटों पर मतदान होगा. इसमें शामली, मुजफ्फरनगर, बागपत, मेरठ, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर, हापुड़, बुलंदशहर जिले प्रमुख हैं. दूसरे चरण में 14 फरवरी को नौ जिलों की 55 विधानसभा सीटों पर मतदान होगा. इसमें सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, संभल, रामपुर, बरेली, अमरोहा, पीलीभीत प्रमुख जिले हैं. पहले दोनों चरणों में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अधिकांश इलाकों में मतदान होगा.

यूपी विधान सभा चुनाव : तीसरे चरण के मतदान के लिए नामांकन हुआ शुरू

लखनऊः तीसरे चरण के मतदान के लिए नामांकन शुरू हो गया है. जिन नेताओं का टिकट फाइनल हो चुका है. वह मुहुर्त निकलवाकर नामांकन पत्र जमा करने में लगे हैं. कुछ नेता नामांकन पत्र जमा कर रहे हैं तो कुछ प्रत्याशी नामांकन लेकर गए हैं.हालांकि अभी इन नेताओं ने नामांकन नहीं जमा किया है. कहा जा रहा है कि प्रत्याशी बाकायदा मुहुर्त निकलवा रहे हैं. ऐसे में जब शुभ मुहुर्त होगा तभी नामांकन पत्र जमा करेंगे. गुरुवार को कलेक्ट्रेट में दो नामांकन जमा हुए जबकि दस नामांकन पत्रों को बिक्री हुई.

जिलाधिकारी अभिषेक प्रकाश ने बताया कि आज कुल दो प्रत्याशियों ने नामांकन किया. उन्होंने बताया कि विधानसभा 168 मलिहाबाद (अ0जा0) में 9, विधानसभा 169 बक्शी का तालाब में 14, विधानसभा 170 सरोजनींगर में 15, विधानसभा 171 लखनऊ पश्चिम में 21, विधानसभा 172 लखनऊ उत्तर में 15, विधानसभा 173 लखनऊ पूर्व में 13, विधानसभा 174 लखनऊ मध्य में 12, विधान सभा 175 कैण्टोनमेंट में 14, विधान सभा 176 मोहनलालगंज (अ0जा0) में 10 नामांकन पत्रों का वितरण किया गया. वहीं विधानसभा 175 कैण्टोनमेंट से राष्ट्रीय राष्ट्रवादी पार्टी के प्रत्याशी अजय कुमार सिंह और विधानसभा 169 बक्शी का तालाब से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस प्रत्याशी लल्लन कुमार ने नामांकन दाखिल किया.

कोरोना की वजह से इस बार नामांकन पत्र के जमा करने में काफी कुछ बदला हुआ नजर आ रहा है. पहले प्रत्याशी दो सेट नामांकन के लेकर आते थे. जिसमें एक नामांकन पत्र मुहुर्त देखकर जमा किया जाता था. जबकि दूसरे नामांकन के समय प्रत्याशी शक्ति प्रदर्शन करते थे. वह अपने काफिले और जुलूस के साथ नामांकन कराने पहुंचते थे. हालांकि इस बार कोरोना की वजह से नामांकन कराने के लिए प्रत्याशी दो चार लोगों के साथ ही जा रहे हैं. न तो उनके साथ कोई तामझाम है और न ही गाड़ियों का काफिला. इतना ही नहीं उनके साथ समर्थक भी पहले की अपेक्षा कम ही नजर आते हैं. हाथों में सेनेटाइजर और मुंह पर मास्क अनिवार्य है.

–एजेंसी

भाजपा के ओबीसी मोर्चा जिला मंत्री सचिन प्रजापति के विरुद्ध कई संगीन धाराओं में हुआ मुकदमा दर्ज

नयी दिल्ली. पुलिस कर्मियों पर थूकने और उनके साथ मारपीट करने के मामले में थाना सिविल लाइन पुलिस ने भाजपा के ओबीसी मोर्चा जिला मंत्री सचिन प्रजापति के विरुद्ध कई संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज होने के बाद थाना सिविल लाइन पुलिस ने बुधवार देर रात उसे गिरफ्तार कर लिया.गुरुवार को उसे सीजेएम कोर्ट में पेश किया गया.

बुधवार को भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिला मंत्री सचिन प्रजापति पर एक पुलिसकर्मी ने आरोप लगाया था कि उन्होंने उसके साथ दुर्व्यवहार किया. पुलिसकर्मी का आरोप था कि ओबीसी मोर्चा जिला मंत्री सचिन प्रजापति थाना सिविल लाइन क्षेत्र की कच्ची सड़क चौकी पहुंचा था. आरोप था कि वहां उसने पुलिस कर्मी के ऊपर थूका, जब उसे ऐसा करने से रोका गया तो उसने पुलिसकर्मी के साथ मारपीट करनी शुरू कर दी. आरोप था कि सचिन प्रजापति उस समय शराब के नशे में था. पीड़ित पुलिसकर्मी की तहरीर पर थाना सिविल लाइन में सचिन प्रजापति के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया था. थाना सिविल लाइन प्रभारी निरीक्षक बिजेन्द्र रावत ने बताया कि बुधवार को मुकदमा दर्ज किया गया था.

उन्होंने बताया कि बुधवार देर रात आरोपी सचिन प्रजापति को गिरफ्तार कर लिया गया था. उन्होंने बताया कि सचिन प्रजापति को गुरुवार को सीजेएम कोर्ट में पेश किया गया.

Have we got our Constitution yet..??

By Faisal Sultan :

Did you know that the father of our nation Mahatma Gandhi praised the system of Islamic khilafat by saying, "I cannot give you the reference of Ram Chandar or Krishna, because they were not historical figures. I cannot help it but to present to you the names of Abu Bakar (the first khalifa) and Umar (the second Khalifa). They were leaders of vast Empires, yet they lived a life of austerity." He also once said that if India finds a man like Umar – ibn –khattab all the problems will be solved. (Source: Wikipedia)

This was a system of equality, justice and peace, established by Prophet Muhammad (peace beupon him) and by which his rightly guided companions (khulfa –e –rasheedeen, may Allah be please with them) ruled and this was the system for which Allama Iqbal (the man who wrote "saare jahan se achcha Hindustan hamara") beautifully cried for:-

Meri zindagi ka maqsad tere deen ki sarfaarazi, Mai isiliye musalma mai isiliye namazi…

If we keep religion separate from state and take human beings as law makers instead of our Creator, then this is what is going to happen.

Homosexuality which was a crime in almost all the countries of the world, a mere twenty to thirty years back, is now not only legalised in many countries of the West and Europe rather they are pressurising other countries to legislate it.

Today, Mexican city legalizes sex in public so police can instead focus on fighting crime. Lawmakers in Guadalajara, Mexico passed legislation that now legalizes public sex acts as long as there are no third-party complaints filed with police. Tommorow if two third of their majority parliamentarians go little further down to decide that there is nothing wrong in having sex with animals, they can very well legalise it. They need no limits and boundaries about whatever they want to do and that is why such a system of sovereignty is not validated in Islam.

The Qur'an explicitly describes Allah as Al-Malik meaning the Sovereign and Al-Malik-ul-Mulk the Eternal Possessor of Sovereignty.

Whatever is in the heavens and the earth belongs to Him and is under His and only His control. He is our Lord and the primary law-giver, therefore no human being or a group of human beings can be the lords over other human beings.

Allah says in the Quran that all human beings are His viceroys to earth and among them there should be a leader (a Khaalifa – the most pious of all) who will act as the custodian of His Laws, derived from the Quran and Sunnah (Teachings of the Prophet Muhammad).

The Khaalifa, thus has rights and powers legislated to him and he further delegates this authority for administering justice and peace to his agents who in return only enjoy marginal autonomy necessary for implementation and enforcement of Islamic laws (the Sharia).

The socio-economic-political system of Sharia which ruled over Spain for over 900 years is the core of Islam.

So many people died in the formation of Pakistan and Bangladesh but what good was there in getting them if Allah's deen was not implemented on these lands. After giving so much blood, the people of Philistine and Kashmir may or may not get their freedom but it will be of what use if the same democracy is imposed upon them.

No other religion brings with it a system of governance except Islam and that is why it was and it is a threat to them. It was crushed by them before and they are crushing it even today, whether it was achieved after fighting with them for so many years by Afghani Talibans (the war on terror or the war against Sharia..?) or implied after winning according to their own system of democratic elections by the Egyptian President M. Morsi.

Morsi sought to influence the drafting of a new constitution that protects civil rights and enshrines Islamic law. (Source: Wikipedia)

If we don't strive for Sharia in which lies our own benefit; they will place in the system policies opposite to what Allah commands and therefore very harmful and dangerous not only for our country but for whole of humanity.

For example, Quran encourages to give charity voluntarily and announces a war against those who deals in business of usury and interest while they have made interest as the blood stream of our financial institutions.

Before farmers used to be the slaves of landlords because of compounding interest, now World Bank and IMF enslaves countries by the same method.

Any sane person can understand that if money is earned on money lending it would not only dry up the channels of giving charity rather it will give rise to a society of ideal wealth hoarders and blood suckers who will do nothing but only increase the gap between the rich and poor which Islam aims to reduce by the principle of Zakaat.

Zakaat is 2.5% tax on our savings if saved for one year while there is no income tax in Islam but they do exact opposite by putting tax on incomes and give returns on our savings. And the latest one is of demonetization. Islam says that money should be real wealth based while they introduced a system of paper currency which means a currency can be made into paper anytime anywhere in the world. We have seen this in our own country and also in the examples of Iraq and Afghanistan.

In future also you will see that they will put all their might and main if the system of Sharia tries to up rise again, but the believers have no other choice except to struggle (do Jihaad), so that such a system can be achieved to save and protect themselves as well as all of mankind. But not by the means terrorism or suicide bombings, not by the means of killing innocent people, not by the ways of war, weaponry or violent protests; but the way our Prophet was ordered to do, the way all those who believed in him then did and all those who believe in him now should do i.e. by spreading and sharing Allah's revelation – with the weapons of His Words – with promulgation of His Noble Qur'an – this is Jihadan Kabira (the biggest Jihaad of all).

Democracy (law of people) is exact opposite of Islam (Law of Allah) and the number of chapter and verse below which commands to strive against it are also exact opposites. Is it just a coincidence or do we have to Think again…

SUBSCRIPTION FORM
TIMES OF PEDIA

Issue	Subscription Price	Years
52	250/-	1
104	500/-	2
260	1,300/-	5
520	2,600/-	10
--	5,000/-	Life

Name :.....
Address :.....
.....
.....
Email:.....
Contact Phone No.....
for donation ☐ /life ☐ /10 yrs ☐ /5 yrs ☐ subscription
The sum of Rupees..... (Rs...../-)
through cheque/DD No.....dt.....

Fill the above form neatly in capital letters and send it to us on the following address :
Times of Pedia, K-2-A-001, Abul Fazal Enclave-I,
Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025
or email : **timesofpedia@gmail.com**

Also Send us your subscription, membership, donation amount in favour of Times of Pedia, New Delhi
Punjab National Bank,Nanak Pura Branch,
New Delhi-110021
A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700

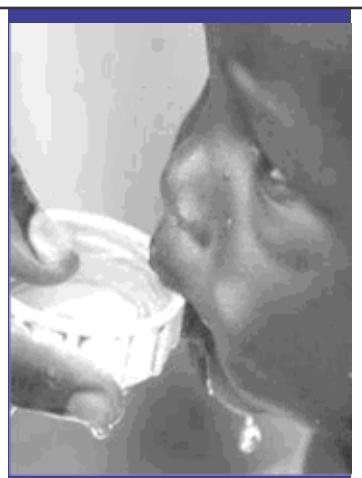

Ending Someone's thirst is the Biggest Deed of Humanity

ADVERTISEMENT TARIFF
TIMES OF PEDIA

Size/Insertion Single	B&W (Rs)	4 Colour (Rs)
Full Page (23.5 x 36.5 cm)	30,000/-	1,00,000/-
A4 (18.7 x 26.5 cm)	20,000/-	60,000/-
Half Page (Tall-11.6 x 36.5 cm)	18,000/-	50,000/-
Half Page (wide-23.5 x 18 cm)	8,000/-	50,000/-
Quarter Page (11.6 x 18 cm)	10,000/-	28,000/-
Visiting Card size (9.5 x 5.8 cm)	3,000/-	10,000/-

MECHANICAL DATA:

Language: English, Hindi and Urdu

Printing: Front and Back - 4 Colours , Inside pages - B&W

No. of Pages: 12 pages (more in future)

Price: Rs. 3/-

Print order: 25,000

Periodicity: Weekly

Material details: Positives/Format of your advertisements should reach us 10 days before printing.

Note: 50% extra for back page, 100% extra for front page

Please Add Rs. 10 for outstation cheques.

50% advance of total add cost would be highly appreciable, in case of one year continue add. Publication cost will reduce 50% of actual cost.

Bank transactions details of TIMES OF PEDIA
Send your subscriptions/memberships/donations etc. (Cheques/DD) in favour of TIMES OF PEDIA New Delhi
Punjab National Bank,Nanak Pura Branch , New Delhi-110021
A/C No.1537002100017151, IFS Code : PUNB 0153700

-:: संक्षिप्त समाचार ::-

दिल्ली में वीकेंड कर्फ्यू खत्म, नाइट कर्फ्यू जारी रहेगा. क्वड। की अगली बैठक में स्कूलों को खोलने पर विचार होगा. शादियां अधिकतम 200 लोगों या 50ः क्षमता के साथ होंगी. बार, रेस्तरां और सिनेमा हॉल के लिए 50ः क्षमता के साथ खुलेंगे. सरकारी कार्यालय 50ः क्षमता के साथ काम करेंगे.

स्वार रामपुर से मोहम्मद आजम खान की पत्नी ने सपा उम्मीदवार के तौर पर दाखिल किया पचा. रामपुर नगर से विधायक हैं, डॉ तंजीम फातिमा. अब्दुल्ला आजम ने स्वार सीट से ही दाखिल किया है, नामाँकन. 2017 के विधान सभा चुनाव में अब्दुल्ला आजम स्वाद से जीते थे, लेकिन दो जन्म प्रमाणपत्र की वजह से विधायकी हाईकोर्ट ने रद्द कर दी थी

मुजफ्फरनगर . तितावी पुलिस ने तमंचा फैक्ट्री का भंडाफोड़ तीन अपराधी गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की है. तमंचा फैक्ट्री से 52 तमंचे व 70 जिंदा कारतूस भारी मात्रा में तमंचे बनाने के उपकरण बरामद किये गये.पुलिस के अनुसार विधानसभा चुनाव में हो सकते थे हथियार सप्लाई करने की तैयारी थी. एसपी देहात अतुल कुमार श्रीवास्तव ने प्रेस वार्ता कर किया तमंचा फैक्ट्री का खुलासा करते हुए कहा कि मुखबिर की सूचना पर तितावी पुलिस ने जसोई के जंगल मे तमंचा फैक्ट्री पर छापामारी के दौरान तीन शातिर अपराधियो को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया.

देहरादून. सहारनपुर से चकराता घूमने आए पर्यटकों की कार खाई में पलट गई. दुर्घटना लागापोखरी के पास हुई. सड़क पर जमी बर्फ के कारण कार फिसलकर अनियंत्रित होकर 50 मीटर गहरी खाई में जा गिरी.कार सवार दंपती सहारनपुर निवासी अमित बहुगुणा पत्नी मुक्ता बहुगुणा और तीन बच्चे श्रुति, अनवी और वैभव के साथ चकराता घूमने आए थे. सभी को चोटें आई हैं. स्थानीय ग्रामीणों की मदद से घायलों को खाई से बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया गया. घायलों में महिला की हालत गंभीर बताई जा रही है. उनका उपचार सीएमआइ देहरादून में चल रहा है. महिला के पति और बच्चों को हल्की चोटें आई हैं.

बता दें कि पहाड़ों में बर्फबारी होने से सड़कें खतरनाक हो रखी हैं. रात में पाला पड़ने से सड़कों में फिसलन बढ़ जाती है. इस दौरान मैदानी क्षेत्रों से आ रहे पर्यटकों को वाहन चलाने में कठिनाई है.

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में एक पत्रकार की पीट–पीटकर हत्या का मामला सामने आया है.पत्रकार सुधीर सैनी की कार सवार लोगों ने पीट–पीटकर हत्या कर दी और इसके बाद शव को छिपाने के लिए उसे गड्ढे में फेंक दिया. पुलिस ने इस मामले में अब तक दो लोगों को गिरफ्तार किया है. घटना को लेकर सहारनपुर के पत्रकारों में गुस्सा है.

पुलिस के मुताबिक, थाना कोतवाली देहात के चिलकाना रोड पर बाइक सवार पत्रकार और ऑल्टो कार में जा रहे तीन लोगों के बीच ओवरटेकिंग को लेकर विवाद हो गया, जिसके बाद कार सवार लोगों ने पत्रकार सुधीर सैनी की बेरहमी से पिटाई की. हादसे के बाद कार सवार मौके से फरार हो गए.

उत्तराखंड विधानसभा चुनाव 2022 : भारतीय जनता पार्टी ने डोईवाला विधानसभा से बृज भूषण गैरोला को अपना प्रत्याशी घोषित किया है, जबकि टिहरी सीट पर कांग्रेस से भाजपा में आए किशोर उपाध्याय को प्रत्याशी बनाया गया है. डोईवाला में अब भाजपा के बृज भूषण गैरोला की टक्कर कांग्रेस के गौरव चौधरी से होगी,

अमेरिका से क्यूं नाराज है चीन?

चीन ने भारत और चीन के बीच बॉर्डर विवाद को लेकर किसी भी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप का विरोध किया है. चीनी रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता सीनियर कर्नल वू कियान ने मीडिया से बात करते हुए कहा है कि बॉर्डर का मसला भारत और चीन के बीच का मामला है और दोनों पक्ष किसी भी तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप का विरोध करते हैं.बता दें कि भारत सरकार का भी यही स्टैंड रहा है कि बॉर्डर मसले को दोनों देश आपस में मिलकर सुलझाएंगे.

भारत चीन बॉर्डर पर तनाव को लेकर अमेरिका के बयान पर चीन वाइट हाउस पर भड़क गया है. वू ने कहा है कि कुछ अमेरिकी नेता श्जबरदस्तीश शब्द का इस्तेमाल करने के इतने शौकीन हैं कि वे भूल गए हैं कि अमेरिका श्जबरदस्ती की कूटनीतिश का आविष्कारक और मास्टर खिलाड़ी है. उन्होंने आगे कहा कि चीन न ही जबरदस्ती करता है और न ही दूसरों को जबरदस्ती करने देता है. चीन अन्य देशों पर श्जबरदस्ती की कूटनीतिश के लिए अमेरिका का कड़ा विरोध करता है.

बता दें कि वाइट हाउस के प्रवक्ता ने कहा था कि अमेरिका, चीन–भारत बॉर्डर पर स्थिति की बारीकी से निगरानी कर रहा है और भारत और अन्य पड़ोसियों को मजबूर करने के चीन के रवैए को लेकर चिंतित है. वू ने कहा है कि दोनों पक्षों के बीच हुए 14वें दौर की वार्ता सकारात्मक और रचनात्मक रही है. चीन बातचीत और परामर्श के जरिए बॉर्डर मसले को सुलझाने का काम करेगा. उन्होंने बताया है कि इस बातचीत में चार समझौते हुए हैं. वू ने बताया है कि दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए हैं कि दोनों देश अपने नेताओं द्वारा दिए गए मार्गदर्शन का पालन करते हुए बचे हुए मसलों के समाधान के लिए जल्द से जल्द काम करेंगे. दूसरी बात ये कि दोनों पक्ष क्षेत्र में जमीन पर सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखने के लिए प्रभावी प्रयास करने को लेकर सहमत हुए हैं.

तीसरा, दोनों पक्ष सैन्य और राजनयिक चौनल के जरिए बातचीत बनाए रखने और जल्द से जल्द दोनों पक्षों को स्वीकार्य समाधान पर काम करने पर सहमत हुए हैं. वू ने चौथी और आखिरी बात कही है कि दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए हैं कि कमांडर स्तर की बातचीत का अगला दौर जल्द से जल्द आयोजित किया जाना चाहिए.

क्या ओमिक्रॉन का असर हो रहा है कम?

नई दिल्लीः देशभर में कोरोना वायरस के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन का कहर देखने को मिल रहा है, जिससे हालात लगातार बदतर होते जा रहे हैं. ओमिक्रॉन से बचाव को लेकर केंद्र व राज्य सरकारें सावधानी बरतने की अपील कर रही हैं.विशेषज्ञों के अनुसार ओमिक्रॉन डेल्टा से कम घातक माना जा रहा है.

डेल्टा वेरिएंट के मुकाबले ओमिक्रॉन वैरिएंट से संक्रमित लोगों में हॉस्पिटिल में भर्ती होने और मृत्यु का जोखिम 50–70 प्रतिशत कम है. इस बीच ओमिक्रॉन के मरीजों के लिए एक अच्छी खबर आई है. भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की स्टडी में दावा किया गया है कि ओमिक्रॉन से रिकवर होने के बाद जो एंटीबॉडी शरीर में बनती हैं. वह डेल्टा सहित अन्य ब्ट्प्क–19 वेरिएंट पर भी प्रभावी हैं.

वहीं, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के वैज्ञानिक प्रज्ञा डी यादव, गजानन एन सपकाल, रीमा आर सहाय और प्रिया अब्राहम द्वारा की गई रिसर्च के मुताबिक, ओमिक्रॉन से संक्रमित लोगों में काफी अच्छा इम्यून रिस्पांस देखने को मिला है, जो कि डेल्टा के साथ कोरोना के अन्य वेरिएंट को बेअसर कर सकता है.

इससे वापस से डेल्टा वेरिएंट से संक्रमित होने की संभावना काफी कम हो जाती है. ओमिक्रॉन से विकसित हुई एंटीबॉडीज कोरोना के अन्य वैरिएंट पर भी काफी असरदार हैं.

इस रिसर्च में जिन 39 लोगों ने भाग लिया था, उनमें भारत के अलावा दूसरे देशों से आए लोग भी शामिल थे. 39 लोगों में से 28 संयुक्त अरब अमीरात, दक्षिणध्पश्चिमध्पूर्वी अफ्रीका, मध्य पूर्व, अमेरिका और यूके से लौटे थे और 11 लोग उनके संपर्क में आए थे. ये सभी लोग ओमिक्रॉन से संक्रमित थे.

इनमें से 25 लोगों ने कोविशील्ड वैक्सीन ली थी, 8 लोगों ने फाइजर वैक्सीन ली थी और 6 लोगों ने कोई भी वैक्सीन नहीं ली थी. रिकवर होने के बाद सभी लोगों में काफी अच्छा इम्यून रिस्पांस देखने मिला, जो कि कोरोना के अन्य वैरिएंट को निष्क्रिय कर सकता है.

रिसर्च के लिए प्ब्डत ने ओमिक्रॉन वैरिएंट (ठ.1. 1529 और ठ।.1) से संक्रमित व्यक्तियों के खून में से लिए गए द्रव के साथ ठ.1, ।सचीं, ठमजं, क्मसजं और व्उपबतवद वैरिएंट के विरुद्ध प्हळ और बेअसर एंटीबॉडी (छ।इे) का विश्लेषण किया.

–एजेंसी

इस बार बजट से पहले वित्त मंत्रालय का हवला सेरेमनी का रिवाज नहीं हुआ

कोरोना के चलते इस बार बजट से पहले वित्त मंत्रालय के भीतर पारंपरिक चला आ रहा हवला सेरेमनी का रिवाज नहीं हुआ है. कर्मचारियों को ष्लॉक–इनष से गुजरने के कारण मिठाई प्रदान की गई. कोरोना महामारी के बीच एक फरवरी 2022 को आम बजट पेश किया जा रहा है.वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी, 2022 को पेपरलेस फॉर्म में बजट पेश करेंगी. कोरोना के चलते इस बार बजट से पहले वित्त मंत्रालय के भीतर परंपरागत चला आ रहा हवला सेरेमनी का रिवाज नहीं हुआ है. केंद्रीय बजट बनाने की प्रक्रिया के अंतिम चरण को चिह्नित करने के लिए, मौजूदा महामारी की स्थिति और आवश्यकता को देखते हुए हर साल एक प्रथागत हलवा समारोह के बजाय कर्मचारियों को उनके कार्यस्थलों पर ष्लॉक–इनष से गुजरने के कारण मिठाई प्रदान की गई ताकि कोरोना प्रोटोकॉव का पालन किया जा सके.

बजट की गोपनीयता बनाए रखने के लिए बजट बनाने में शामिल अधिकारियों का ष्लॉक–इनष होता है. नॉर्थ ब्लॉक के अंदर स्थित बजट प्रेस, केंद्रीय बजट की प्रस्तुति तक की अवधि में सभी अधिकारियों को रखता है. केंद्रीय वित्त मंत्री द्वारा संसद में बजट पेश करने के बाद ही ये अधिकारी और कर्मचारी अपने प्रियजनों के संपर्क में आएंगे.

2021–22 का केंद्रीय बजट पहली बार पेपरलेस रूप में पेश किया गया था. संसद सदस्यों (सांसदों) और आम जनता द्वारा बजट दस्तावेजों की परेशानी मुक्त पहुंच के लिए एक ष्केंद्रीय बजट मोबाइल ऐपष भी लॉन्च किया गया था. 1 फरवरी 2022 को संसद में बजट प्रस्तुत करने की प्रक्रिया पूरी होने के बाद केंद्रीय बजट 2022–23 मोबाइल ऐप पर भी उपलब्ध होगा.

प्रमोशन में आरक्षण पर आया सुप्रीम कोर्ट का फैसला

सुप्रीम कोर्ट ने प्रतिनिधित्व संबंधी वास्तविक आंकड़े जुटाए बिना अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के कर्मचारियों के लिए पदोन्नति में आरक्षण प्रदान करने के मानदंड में किसी प्रकार की छूट देने से शुक्रवार को इनकार कर दिया. न्यायमूर्ति एल. नागेश्वर राव, न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति बी. आर. गवई की पीठ ने कहा कि आरक्षण देने से पहले प्रतिनिधित्व की अपर्याप्तता पर मात्रात्मक आंकड़े एकत्र करने के लिए राज्य बाध्य है.

न्यायमूर्ति एल नागेश्वर राव के नेतृत्व वाली पीठ ने फैसला सुनाते हुए कहा, "एम नागराज (2006) और जरनैल सिंह (2018) में अदालत के फैसले के अनुसार राज्य मात्रात्मक डेटा एकत्र करने के लिए बाध्य है. संपूर्ण सेवा के लिए प्रत्येक श्रेणी के पदों के लिए डेटा का संग्रह होना चाहिए." पीठ ने कहा कि केंद्र सरकार को अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के पदों के प्रतिशत का पता लगाने के बाद आरक्षण नीति पर फिर से विचार करने के लिए एक समय अवधि निर्धारित करनी चाहिए.

अदालत ने कहा, "अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के लिए अपर्याप्त प्रतिनिधित्व के लिए समीक्षा की जानी चाहिए. समीक्षा की अवधि एक उचित अवधि होनी चाहिए और इस अवधि को तय करने के लिए सरकार पर छोड़ दिया गया है. इसमें कहा गया है कि प्रमोशनल पदों पर आरक्षित वर्ग के प्रतिनिधित्व की कमी का आकलन राज्यों पर छोड़ दिया जाना चाहिए.

सुप्रीम कोर्ट ने आज लंबे समय से लंबित सरकारी नौकरी में प्रमोशन में आरक्षण के मुद्दे पर आज अपना फैसला सुना दिया है. सरकारी नौकरियों में अनुसूचित जाति (ै) और अनुसूचित जनजाति (ज) को प्रमोशन में आरक्षण देने के मुद्दे पर सुनवाई पूरी हो चुकी थी. जस्टिस एल नागेश्वर राव की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ ने इस मामले पर अटार्नी जनरल के के वेणुगोपाल, अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल बलबीर सिंह और विभिन्न राज्यों की ओर से पेश हुए अन्य वरिष्ठ वकीलों सहित सभी पक्षों को सुना था.

केंद्र सरकार ने पीठ से कहा था कि यह सत्य है कि देश की आजादी के 75 साल बाद भी एससी–एसटी समुदाय के लोगों को अगड़े वर्गों के समान मेधा के स्तर पर नहीं लाया गया है. पीठ ने इस मामले पर सुनवाई पूरी करते हुए 26 अक्टूबर 2021 को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था,

सुरक्षा में लगे पुलिसकर्मी पर भरोसा नहीं: अब्दुल्ला आजम

आजम खान के बेटे और स्वार सीट से समाजवादी पार्टी (सपा) के उम्मीदवार अब्दुल्ला आजम ने कहा है कि उनकी सुरक्षा में जो पुलिसकर्मी तैनात किए गए हैं, उनपर उन्हें भरोसा नहीं है. उन्होंने यह भी आशंका जताई है कि सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मी ही उन्हें गोली मार सकता है. हाल ही में सीतापुर जेल से जमानत पर निकले अब्दुल्ला आजम ने कहा कि उनकी सुरक्षा उनके मालिक के भरोसे है.

अब्दुल्ला आजम ने मीडिया से कहा, आपके साथ अधिकारी हैं, आपके साथ पुलिस है, दो–दो सरकारें हैं. मैं तो अकेला हूं, मेरे साथ तो कोई भी नहीं है. मेरे साथ तो जो पुलिसवाले चल रहे हैं, उनपर ही भरोसा नहीं है, कि वही किसी चीज में रख दें, वही गोली मार दें, मैं तो अकेला हूं. मेरी सुरक्षा बस मेरा मालिक करता है, इसके अलावा जो मेरे साथ लोग रहते हैं, वे करते हैं. मुझे किसी की सुरक्षा नहीं चाहिए.

आपके साथ जो सुरक्षाकर्मी हैं उनसे खतरा है आपको? यह पूछे जाने पर अब्दुल्ला ने कहा, उन्हें मेरी सुरक्षा के लिए नहीं, मेरी रेकी के लिए लगाए गए हैं, कि मैं कब कहां हूं और किससे मिल रहा हूं. वे मेरी सुरक्षा के लिए नहीं लगाए गए हैं, यह सूचना देने के लिए लगाए गए हैं कि कब किससे मिल रहा हूं. अब्दुल्ला आजम को सपा ने स्वार सीट से उम्मीदवार बनाया है. वह 2017 में भी इस सीट से चुनाव जीते थे, लेकिन डेट ऑफ बर्थ गलत पाए जाने की वजह से बाद में उनकी विधायकी चली गई थी. इस बार भी सपा को उनका नामांकन खारिज होने की आशंका है, इसलिए आजम खान की पत्नी तंजीन फातिमा के नाम से भी पर्चा लिया गया है.

बजट 2022: इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी स्कीम को मार्च 2023 तक बढ़ाया जाएगा

छोटे उद्यमियों को होगा बड़ा लाभ

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण आम बजट 2022 भले ही आयकर स्लैब में कोई बदलाव नहीं किया हो, लेकिन सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के लिए बड़ी घोषणाएं की हैं। वित्त मंत्री ने आपातकालीन ऋण गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) की समयसीमा और गारंटी के दायरे में विस्तार किया है।

ईसीएलजीएस का गारंटी कवर बढ़ाया

वित्त मंत्री ने आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) को मार्च 2023 तक बढ़ा दिया है। साथ ही ईसीएलजीएस के तहत गारंटी कवर को अब 50,000 करोड़ रुपए से बढ़ाकर कुल कवर 5 लाख करोड़ रुपए तक किया जाएगा। अतिरिक्त सहायता विशिष्ट रूप से आतिथ्य और संबंधित उपक्रमों के लिए निर्धारित की जा रही है।

ईसीएलजीएस के तहत 130 लाख से अधिक MSMEs को अत्यंत आवश्यक और अतिरिक्त ऋण

वित्त मंत्री ने यह जानकारी भी दी कि ईसीएलजीएस के तहत 130 लाख से अधिक एमएसएमई को अत्यंत आवश्यक और अतिरिक्त ऋण प्रदान किया गया है। इससे उनको महामारी के प्रतिकूल प्रभाव से राहत पाने में मदद मिली है। यह प्रस्ताव इस पहलू पर विचार करते हुए प्रस्तुत किया गया है कि विशेषकर सूक्ष्म और लघु उद्यमों की आतिथ्य और संबंधित सेवाओं का अभी महामारी से पहले की अवस्था को फिर से हासिल करना अभी बाकी है। वित्त मंत्री ने एमएसएमई क्षेत्र से संबंधित कई अन्य प्रस्ताव भी प्रस्तुत किए।

क्या है ईसीएलजीएस ?

इमरजेंसी क्रेडिट लाइन गारंटी स्कीम यानि ईसीएलजीएस एक खास तरह की लोन स्कीम है। कोरोना महामारी के चलते प्रभावित एमएसएमई सेक्टर को उबारने के लिए केंद्र सरकार ने इसका एलान किया था। जानकारी के मुताबिक आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) के तहत 4 दिसंबर 2020 को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, शीर्ष 23 निजी क्षेत्र के बैंकों और 31 एनबीएफसी के अनुसार 80,93,491 उधारकर्ताओं को 2,05,563 करोड़ रुपए की अतिरिक्त क्रेडिट राशि मंजूर की गई थी जबकि 40,49,489 कर्जदारों को 1,58,626 करोड़ दिए गए थे।

इसके पश्चात 26 नवंबर 2020 को योजना में और संशोधन किया गया और योजना की अवधि 31 मार्च 2021 तक बढ़ा दी गई। इसके अलावा, निर्धारित टर्नओवर की सीमा को हटा दिया गया है। 26 नवंबर 2020 को ईसीएलजीएस 2.0 के परिचालन दिशा–निर्देश जारी किए गए थे। ततपश्चात यह उम्मीद की गई कि 45 लाख इकाइयां इस योजना के माध्यम से व्यावसायिक गतिविधियों को फिर से शुरू कर सकती हैं और नौकरियों की सुरक्षा कर सकती हैं। अब वित्त मंत्री ने आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) को मार्च 2023 तक बढ़ा दिया है। इस प्रकार केंद्र सरकार कोविड महामारी के मुश्किल समय में भी सूक्ष्म और लघु उद्यमों की मदद के लिए सदैव तत्पर रही है।

सीजीटीएमएसई योजना के माध्यम से अतिरिक्त ऋण

अपेक्षित धन लगाकर क्रेडिट गारंटी ट्रस्ट फॉर माइक्रो एंड स्मॉल इंटरप्राइजेज (सीजीटीएमएसई) योजना को पुनर्जीवित किया जाएगा। वित्त मंत्री ने कहा कि इससे सूक्ष्म और लघु उद्यमों को 2 लाख करोड़ रुपए का अतिरिक्त ऋण मिल सकेगा और रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

सरकार ६,००० करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ शुरू करेगी आरएएमपी प्रोग्राम

इस बार बजट में वित्त मंत्री ने पांच वर्षों में 6,000 करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ रेजिंग एंड एक्सिलरेटिंग एमएसएमई परफोर्मेंस (आरएएमपी) कार्यक्रम आरम्भ करने की भी घोषणा की है। इससे एमएसएमई क्षेत्र को अधिक लचीला, प्रतिस्पर्धी और दक्ष बनने में मदद मिलेगी।

उद्यम, ई-श्रम, एनसीएस और असीम पोर्टल्स को आपस में जोड़ा जाएगा

केंद्रीय वित्त मंत्री ने यह प्रस्ताव भी पेश किया कि उद्यम, ई–श्रम, एनसीएस और असीम पोर्टल्स को आपस में जोड़ने का कार्य किया जाएगा और उनके दायरे को भी बढ़ाया जाएगा। अब वे जी2सी, बी2सी और बी2बी सेवाएं प्रदान करने वाले लाइव, ऑर्गेनिक डाटा बेस युक्त पोर्टल्स के रूप में काम करेंगे। अर्थव्यवस्था को और अधिक औपचारिक बनाने और सभी के लिए उद्यम संबंधी अवसरों को व्यापक बनाने के उद्देश्य से ये सेवाएं क्रेडिट सुविधा, कौशल विकास और भर्ती के साथ संबद्ध की जाएंगी।

सीमा शुल्क को युक्तिसंगत बनाया

वहीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने विभिन्न शुल्कों को और ज्यादा युक्तिसंगत बनाने के लिए छातों पर शुल्क 20 प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रस्ताव किया है। इसी के साथ छातों के कलपुर्जों पर छूट वापस ले ली गई है। कृषि क्षेत्र के भारत में निर्मित औजारों और उपकरणों पर भी छूट को युक्तिसंगत बनाया गया है। एमएसएमई सेकेंडरी स्टील उत्पादकों को राहत पहुंचाने के लिए स्टील स्क्रैप पर पिछले साल दी गई सीमा शुल्क में छूट को एक और वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया है। स्टेनलेस स्टील और कोटेड स्टील फ्लैट प्रोडक्ट्स, एलॉय स्टील की बार हाई स्पीड स्टील पर कुछ एंटी–डंपिंग तथा सीवीडी को धातु की अधिक कीमतों पर गौर करते हुए व्यापक जनहित में हटाया जा रहा है।

तुम्हारी दास्तान तक न होगी दस्तानों में

Kalimul Hafeez Politician, President, AIMIM Delhi Chapter

मुसलमानों को अगर अपने मसाइल हल करने हैं तो उन्हें सियासी तौर पर अपने झंडे के नीचे मुत्तहिद होना ही होगा.

भारत के पाँच राज्यों में चुनाव चल रहे हैं। सबकी निगाहें उत्तर प्रदेश के चुनाव पर टिकी हैं। इसलिये कि यहाँ दूसरी पार्टियों के साथ–साथ आल इंडिया मजलिस इत्तिहादे–मुस्लिमीन भी मैदान में है। कोविड कि वजह से चुनाव उस तरह से तो नहीं हो रहे हैं जिस तरह हुआ करते थे, फिर भी वर्चुअल रेलियाँ हो रही हैं, सोशल मीडिया पर सन्देश भेजे जा रहे हैं, प्रिंट–एंड–इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से अपनी बात पहुँचाने की कोशिश की जा रही है। उत्तर प्रदेश में रूलिंग पार्टी के बड़े–बड़े लीडर्स घर–घर जा कर वोट मांग रहे हैं।

रूलिंग पार्टी, जिसने शहरों और स्टेशनों के नाम बदलने, शहरों के बीच नफरत बढ़ाने और मंदिर मस्जिद की सियासत करने के सिवा कुछ नहीं किया है, उसे पश्चिमी–उत्तर प्रदेश में सख़्त मुखालिफत का सामना है। कई गाँवों और शहरों में बैनर्स लगे हैं की यहाँ बी. जे. पी. के लीडर्स का आना मना है। देश के भारी–भरकम होम–मिनिस्टर अमित शाह जाट लीडरों को मनाने की भरपूर कोशिश कर रहे हैं। हर तरह से डोरे डाले जा रहे हैं। कोई मुजफ्फर नगर दंगों की याद दिला कर गर्मी को ठंडा करने की बात कर रहा है। इसी बीच खुदा का एक बन्दा जिसका नाम असदुद्दीन ओवैसी है, अपनी कौम और मजलूमों को गफलत की नींद से बेदार करने की कोशिश कर रहा है।

खुदा के इस बन्दे का कहना है कि आजादी के बाद पिछले 74 साल से हम गैर–मजहब के लोगों को वोट देते आए हैं। उनकी दरियाँ बिछाते रहे हैं, उनकी जूतियाँ सीधी करते रहे हैं। मगर बदले में उन्होंने हमारा हक नहीं दिया। हमसे वादे करते रहे, मगर वो वादे कभी पूरे नहीं किये। खुदा के इस बन्दे की ये बात 100 प्रतिशत सही है। उत्तर प्रदेश के किसी हिस्से में भी मुसलमानों को उनका जाइज हक नहीं मिला। तालीम, सेहत, रोजगार, सुरक्षा किसी भी मैदान में उन्हें तरक्की नहीं मिली। सरकारी स्कूलों से वो महरूम रहे। अलबत्ता झूठे इल्जामात लगा कर नाजाइज मुकद्मात में जेलों में बंद कर दिया गया।

योगी सरकार मुसलमानों पर जुल्म करती रही और सब खामोश तमाशा देखते रहे। अब तो कम से कम उत्तर प्रदेश के मुसलमानों को आँखें खोलनी चाहिएँ। लेकिन अभी भी जो सूरत–ए–हाल है वो अफसोसनाक है। सगे भाई की जरा सी बात पर उससे नाता तोड़ने वाला मुसलमान, अखिलेश की ज़्यादतियों को भूलने के लिए तैयार है। एक बार फिर मुसलमानों को बी. जे. पी. का खौफ दिलाया जा रहा है। कई मुसलमानों से मेरी बात हुई उनका कहना है कि एक बार और समाजवादी को वोट करना है अगर उसने अब धोखा दिया तो अगली बार ओवेसी साहब को ही वोट देंगे।

ये कितना हिमाकत भरा जवाब है, यानी जान–बूझ कर कुएँ में कूदने का इरादा है, सोच–समझ कर जहर का पियाला पिया जा रहा है। एक बार फिर उन लोगों पर भरोसा किया जा रहा है जिन्होंने हमारे खून की होलियाँ खेली हैं, साम्प्रदायिक दंगों में अहम रोल अदा करने वालों को टिकिट दिये। जिसने डी. एस. पी. जियाउल–हक के कातिलों को अपना उम्मीदवार बनाया। जिसने पश्चिमी उत्तर प्रदेश को उस दल के हवाले कर दिया जो किसी वक्त भी बी. जे. पी. से हाथ मिला सकता है। जिसने आजम खान जैसे कदावर लीडर की कोई खबर नहीं ली।

आखिर ऐसी कौनसी मजबूरी है कि हम समाजवादी को वोट करें। योगी जी के पाँच साल में मुसलमानों के खिलाफ जो कानून बने, क्या आप समझते हैं वो वापस हो जाएँगे। ये कभी नहीं होगा। जो कानून बन चुके हैं वो बाकी रहेंगे, यही समाजवादी जिसने वादा किया था कि मुसलमानों को 18 प्रतिशत रिजर्वेशन देंगे, उसने कहा था बे–गुनाहों को जेल से बाहर लाएँगे, उसके इस वादे पर यकीन करके मुसलमानों ने वोट दिया और अखिलेश भईया चीफ मिनिस्टर बन गए। मगर पूरे पाँच साल गुजर गए, रिजर्वेशन की बात भी नहीं हुई, वो बे–गुनाहों को जेल से तो आजाद न करा सके बल्कि खालिद मुजाहिद को पुलिस ने शहीद करके दुनिया से आजाद कर दिया।

मुसलमानों की जान–व–माल की हिफाजत का दम भरने वालों के जमाने में लगभग दो दर्जन से अधिक साम्प्रदायिक दंगे हुए। मुसलमानों की याददाश्त इतनी कमजोर क्यों हो गई? वो किसी के डर से घबरा कर अपने कातिलों को क्यों भूल गए? अगर इस चुनाव में भी वही गलती दोहराई गई जो 2017 में दोहराई गई थी, तो आने वाली नस्लें माफ नहीं करेंगी। बी. जे. पी. से घबराने की क्या जरूरत है? अल्लाह से डरने वाले, बुतों के बन्दों से क्यूँ डरने लगे? अल्लाह ने हर शर में खैर के पहलु रखे हैं।

बी. जे. पी. के अत्याचार हमें बेदार करने में मददगार हैं, वो तलाक का कानून लाए तो लोगों ने इस्लाम के कानूने–तलाक को समझा, वो लव–जिहाद पर कानून लाए तो जिहाद पर बातचीत का मौका मिला, वो धर्मान्तरण कानून लाए तो नागरिकों के मौलिक अधिकार खतरे में पड़ गए, इन जालिमों की वजह से मुसलमानों में एकता के आसार दिखाई दिये, मुझे याद नहीं कि पिछले पाँच साल में शिया–सुन्नी, या बरेलवी और देवबंदी के बीच कोई दंगा हुआ हो। अगर उन्होंने हम पर तालीम के दरवाजे बंद किये तो हमने अपने इदारे खोलने पर तवज्जोह दी, अगर उन्होंने हमारी मस्जिद की जगह राम मंदिर बनाया तो मुसलमानों को अपनी मसजिद के कानूनी हिफाजत का खयाल आया। इसलिये किसी तरह की घबराहट का शिकार नहीं होना है। आपकी सफलता और कामियाबी इसी में है कि आप अपनी लीडरशिप को मजबूत करें।

ओवैसी साहब गली–गली और गाँव–गाँव जाकर आपको जगा रहे हैं, आप भी उनसे बहुत मुहब्बत करते हैं, इस मुहब्बत का तकाजा है कि आप उनपर भरोसा भी करें। उनके प्रतिनिधियों को वोट दें, चाहे उनका प्रतिनिधि हार जाए लेकिन आप अपने वोटों कि गिनती जरूर करा दीजिये। आप दूसरों को जो वोट करते हैं उसकी ताकत को कोई तस्लीम नहीं करता, लेकिन ओवैसी साहब को डाला जाने वाला एक–एक वोट बहुत कीमती है, उसकी ताकत का शायद आप अंदाजा भी न लगा सकें।

साम्प्रदायिक सियासत जिस अति को पहुँच चुकी है। उससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि भविष्य का भारत कैसा होगा। जिस देश में तालीम और सेहत की बिगड़ती सूरते–हाल, बेरोजगारी और महंगाई में बढ़ोतरी, इन्सानी खून के बेकीमत हो जाने के बजाए गाय और मंदिर की बात हो, जहाँ तीन तलाक और महरम के बगैर हज को सरकार के महान और प्रशंसनीय कारनामों में गिना जाता हो। उस देश का अल्लाह ही हाफिज है।

मजलिस के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से मेरी अपील है कि वो कौम के भरोसे को ठेस न पहुँचाएँ। उम्मत ने आज तक इतने धोखे खाए हैं कि वो अब और धोखे को बर्दाश नहीं कर सकती। वो अपनी लीडरशिप के नाम पर भी धोखा खा चुकी है। इसलिये अब और कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिये कि उम्मत के नसीब में फिर धोखा आ जाए। इसलिये मजलिस के सदस्यों को अपने जज्बात की कुर्बानी देनी होगी। हो सकता है कि मजलिस के बड़े जिम्मेदार उनकी राय के खिलाफ किसी को उम्मीदवार बना दें, उनकी मर्जी भी मालूम न करें, उस वक्त आपको सब्र दिखाना होगा।

अगर आप बैरिस्टर साहब को अपना लीडर तस्लीम कर चुके हैं तो फिर उनके फैसलों को भी तस्लीम कीजिये।

अगर आपकी नजर में कोई फैसला ना–मुनासिब है तब भी कड़वा घूट समझ कर पी जाइये। इसलिये कि आपका आपस में इख्तिलाफ विरोधियों के हौसलों को ताकत देता है और आम मुसलमानों को बद–गुमान कर देता है।

मेरे अजीजों! मजलिसे–हिन्द मुसलमानों की उम्मीद का आखिरी चिराग है, उसे अपना खून दे कर भी रौशन रखिये। याद रखिये, मुसलमानों को अगर अपनी समस्याएँ हल करनी हैं तो उन्हें सियासी तौर पर अपने झंडे के नीचे मुत्तहिद होना ही होगा। वरना बकौल अल्लामा इकबाल (रह.)

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिंदी मुसलमानो।

तुम्हारी दास्तान तक भी न होगी दस्तानों में॥

गठबंधन को मजबूत करने हेतु अखिलेश यादव और जयंत चौधरी की प्रेसवार्ता

समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव और आरएलडी अध्यक्ष जयंत चौधरी आज मुजफ्फरनगर में साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित कर रहे हैं.यह प्रेस कांफ्रेंस केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा जयंत चौधरी को सपा के साथ गठबंधन छोड़ने और बीजेपी में शामिल होने का निमंत्रण देने के बाद हो रही है.

अखिलेश यादव ने कहा, श्मैं कई घंटे हेलिकॉप्टर में बैठा रहा. रिफिल करवाना पड़ा. देरी का कारण मुझे नहीं बताया गया. आज जयंत चौधरी और हम लोग विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं. यह चुनाव चौधरी चरण सिंह की विरासत को आगे बढ़ाने का भी है जो किसानों को संपन्न बनाना चाहते थे.श पूर्व सीएम ने कहा कि तीन कानून बिना किसानों के रायशुमारी के लाए गए. किसानों ने एक होकर सरकार को कानून वापस लेने पर मजबूर कर दिया. तीन कानून को वोट के लिए वापस लिए हैं. किसानों को भरोसा दिलाना चाहता हूं कि कोई भी ऐसा कानून यूपी में लागू नहीं हो पाएंगे. बिजली 300 यूनिट मुफ्त होगी और एमएसपी की खरीद के लिए सरकारी इंतजाम करने होंगे, वो हम करेंगे.अखिलेश यादव ने कहा कि बीजेपी अपना संकल्प पढ़ें कि उसने अपने वादे को पूरा किया क्या? इस बार ऐतिहासिक जीत होने जा रही है. आरएलडी और एसपी मिलकर बीजेपी को हराने जा रही है. हम दोनों किसानों के बेटे हैं. किसानों के हक के लिए आखिरी हक तक लड़ेंगे.

उन्होंने आगे कहा कि गंगा–जमुनी तहजीब को बढ़ाने का काम कर रहे हैं. एसपी और आरएलडी मिलकर के किसानों के लिए संघर्ष करते रहेंगे. बीजेपी अभी भी पुराने मुद्दे को ही उठा रही है. अखिलेश यादव ने कैराना में पलायन से जुड़े बीजेपी के आरोपों पर कहा कि बीजेपी का इस बार राजनीतिक पलायन होगा. बाबा सीएम को पलायन हो गया है. बीजेपी ने उन्हें घर भेज दिया है.

उन्होंने कहा कि बीजेपी के लोग पर्चा भी बांट रहे हैं तो कोरोना फैलाने का काम कर रहे हैं. ऐसे लोगों पर चुनाव आयोग को रोक लगानी चाहिए.

अखिलेश यादव ने कहा कि घरेलू बिजली और आम लोगों के लिए 300 यूनिट फ्री में दिया जाएगा. बीजेपी ने हमारे अनाउंसमेंट के बाद आधा बिजली दाम की बात कर दी. साढे चार साल में क्यों नहीं किया? गन्ने का 15 दिन में भुगतान होगा और 15 दिन से ज्यादा किसानों को इंतजार नहीं करना पड़ेगा.

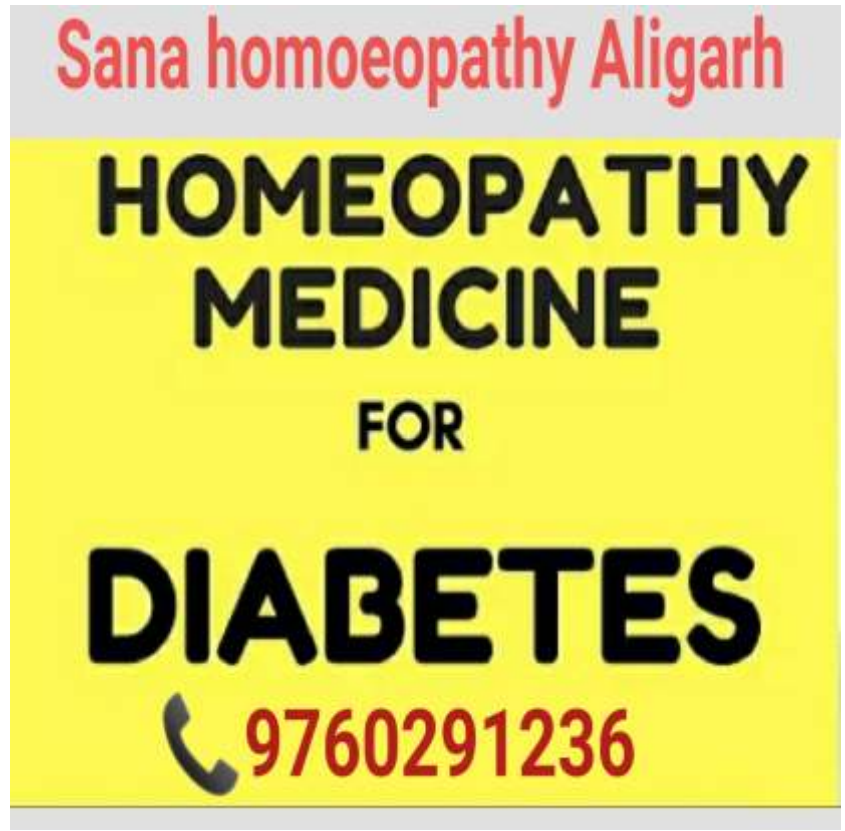

Congratulations

TO THE YOUNG AND TALENTED STUDENTS OF TALENT ZONE ACADEMY FOR ACHIEVING SUCH MARKS IN NEET & IIT.

You all have proved that great things can be achieved through hard works and efforts I would also like to congratulate the faculty team of the Talent Zone Academy for their efforts and giving proper guidance to the students This result marks the first stroke of the beginning

कैसे नुकसान पहुंचा सकती है अखबार में लपेटी गई रोटियां

अखबार में रोटियों के रखने से आपको खतरनाक बीमारियां भी हो सकती है. अखबार की स्याही में ग्रेफाइट नामक एक विषैला तत्व होता है. जानकार इस तत्व से बचने की सलाह देते हैं.क्या आप रोटियों को अखबार में लपेटकर रखती हैं? क्या आप रोटियों को अखबार में लपेटकर बच्चों के लिए टिफिन पैक करती हैं? यह दो ऐसे सवाल है जो आपको गंभीर बीमारियों में डाल सकती है. जी हां, अगर आप रोटियों को अखबार में रखते हैं तो इससे आपको लानलेवा बीमारी भी हो सकती है. अखबार में रखी हुई रोटियों में विषैले तत्व पाए जाते है जिससे हमें पेट की बीमारी भी हो सकती है. तो आइए जानते है कि रोटियों को क्यों अखबार में नहीं रखना चाहिए और इससे क्या नुकसान होता है.

मामले की जानकार डाइटीशियन अनिता झा ने रोटियों को अखबार में रखने से मना किया है. उनका कहना है कि इस तरीके से रोटियों को अखबार में रखने से अखबार की स्याही रोटियों में लग जाती है. इन स्याहियों में डाई आइसोब्यूटाइल फटालेट और आईसोस्यूटाइल जैसे खतरनाक रसायन पाए जाते है जो शरीर के लिए काफी नुकसानदायक होता है. इस तरह की रोटियां खाने से हमारे शरीर में विषैले तत्व जा सकते हैं जिससे हमारे शरीर पर गलत असर पड़ सकता है.

डाइटीशियन अनिता का कहना है कि जब हम रोटियों को अखबार में लपेट कर रखते हैं तो इससे अखबार की स्याही उसमें लग जाती है. अखबार की स्याही में ग्रेफाइट नामक एक विषैला तत्व होता हैं जो गर्म रोटियों के संपर्क में आने के बाद बायोएक्टीव तत्व को सक्रीय कर देता हैं. इसके बाद ये रोटी में मिल जाते हैं और इस तरीके से विषैले तत्व रोटियों के माध्यम से हमारे शरीर में पहुंचते हैं. ये खतरनाक रसायन शरीर के लिए बहुत खतरनाक साबित होते हैं. जानकार बताते है कि जब यह रसायन रोटियों के माध्यम से शरीर में पहुंचता है तो यह हार्मोन्स के संतुलन को बिगाड़ने लगता है. इसके कारण प्रजनन क्षमता कमजोर पड़ जाती है. कभी कभी इस केस में लोग नपुंसकता तक का शिकार भी हो जाते हैं. इसके अलावा आपको पेट दर्द, त्वचा रोग और गैस जैसी बीमारी का भी सामना करना पड़ सकता है. कई बार इस केस में ऐसा देखा गया है कि इससे आपको मुंह, गले और पेट के कैंसर का भी शिकायत हो जाता है.

अगर आप रोटियों को सही से रखना चाहते है तो इसके लिए आप कपड़ा का इस्तेमाल कर सकते हैं. कपड़ा न केवल सुरक्षित होता है, बल्कि इसके इस्तेमाल से आपकी रोटियां भी गर्म रहती है. पहले घरों में दादी रोटी रखने के लिए कपड़े का ही इस्तेमाल करती थी और यही तरीका सबसे अच्छा और सेफ है.

इस लेख में दी गई जानकारियां और सूचनाएं सामान्य मान्यताओं पर आधारित हैं. इनकी पुष्टि नहीं करता है. इन पर अमल करने से पहले या इसके बारे में अधिक जानकारी लेने के लिए डॉक्टरों से जरूर संपर्क करें.

—एजेंसी

Cure Cancer and Tumor with Papaya latex

Almost any part of the papaya plants have a benefit. In fact, the papaya latex is available in the entire plant, from the fruit, leaf, stem, and root, has usefulness as an anti tumor and anti cancer. This is because more than 50 amino acids within it.

From some of the research described, the stem and leaves on the papaya plant contain a lot of white latex like a milk (milky white latex), which has developed as an anti cancer. Benefits of papaya latex for health Bouchut proved scientifically, as quoted Society Journal of Biology, papain that are anti tumor or cancer.

Possible role of the uterus by karpain compound, alkaloid with lactose ring contains seven groups of metilen chain. With that configuration, not only tumor and a skin disease cured, karpain was also hindered the effective performance of some of the microorganisms as possible digestive function, so effective for the cause of typhus.

More than 50 amino acids in the papaya latex, tamarind, among others aspartat, treonin, Serin, glutamate acid, prolin, glisin, alanin, valine, isoleusin, leusin, tirosin, fenilalanin, histidin, lysin, arginin, tritophan, and sistein. Together they become the raw materials for the cosmetics industry refine the skin, strengthen the network to be more elastic, and maintaining dental plaque from the heap. All this time, latex of the papaya leaves are used for tenderize meat, by wrapped up the raw meat with the leaves for several hours in room temperature. In addition, papaya leaves can be rubbed directly on the meat surface. Scrubbing the meat using the papaya leaves is meant to put out the latex (lateks) that are on the leaves, and then the latex will enter in the flesh. In some areas, the meat is cooked directly with the leaves and unripe papaya fruit to get the meat soft and easily digested. Currently, there is the latex in the leaves and unripe papaya fruits extracted to be used as a mixture of commercial meat tenderizer.

Use of the latex can be injected directly on livestock half hour before being butchered, the meat is so soft. Enzyme papain will hydrolysis the collagen in meat, so it forms a loose and the meat will be more mellow. This is the enzyme papain that remodel protein (collagen) into several parts.

Park in the third edition of Family Medicine Department of Health mentioned, including papaya plants that grow quickly and bear much fruit. In the tropics, the first conception can take less than one year and bear fruit throughout the year. Number of fruit can reach 50-150 per tree per year. If you like papaya fruit, of course agree that the benefits and its nutrition value for health is very good. Not only have high-fiber, papaya also contains different types of enzyme, vitamins, and minerals. Even the womb to its vitamin A than carrots, and vitamin C is higher than the orange. Also rich with vitamin B complex and vitamin E.

More terrible, the actual papain enzyme in papaya fruit work to expedite the process of protein digestion. Protein content in the papaya fruit is not too high, only 4-6 grams per kilogram weight of fruit, but almost all can be digested and absorbed the body. This is due to papain enzyme in papaya fruit capable to digest substance 35 times greater than its own size.

Due to easy and not kept the season, the price of papaya is much cheaper compared with other fruit. Although the price cheap, It has so many benefits. In fact, every part of the plant, from seed, fruit, leaves, to it's latex, can be used for various complaints. Not surprisingly, can be referred to as the papaya fruit idol throughout the season.